जनवरी-2016 ◆ वर्ष 4 ◆ अंक 8 ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक

जनवरी-२०१६

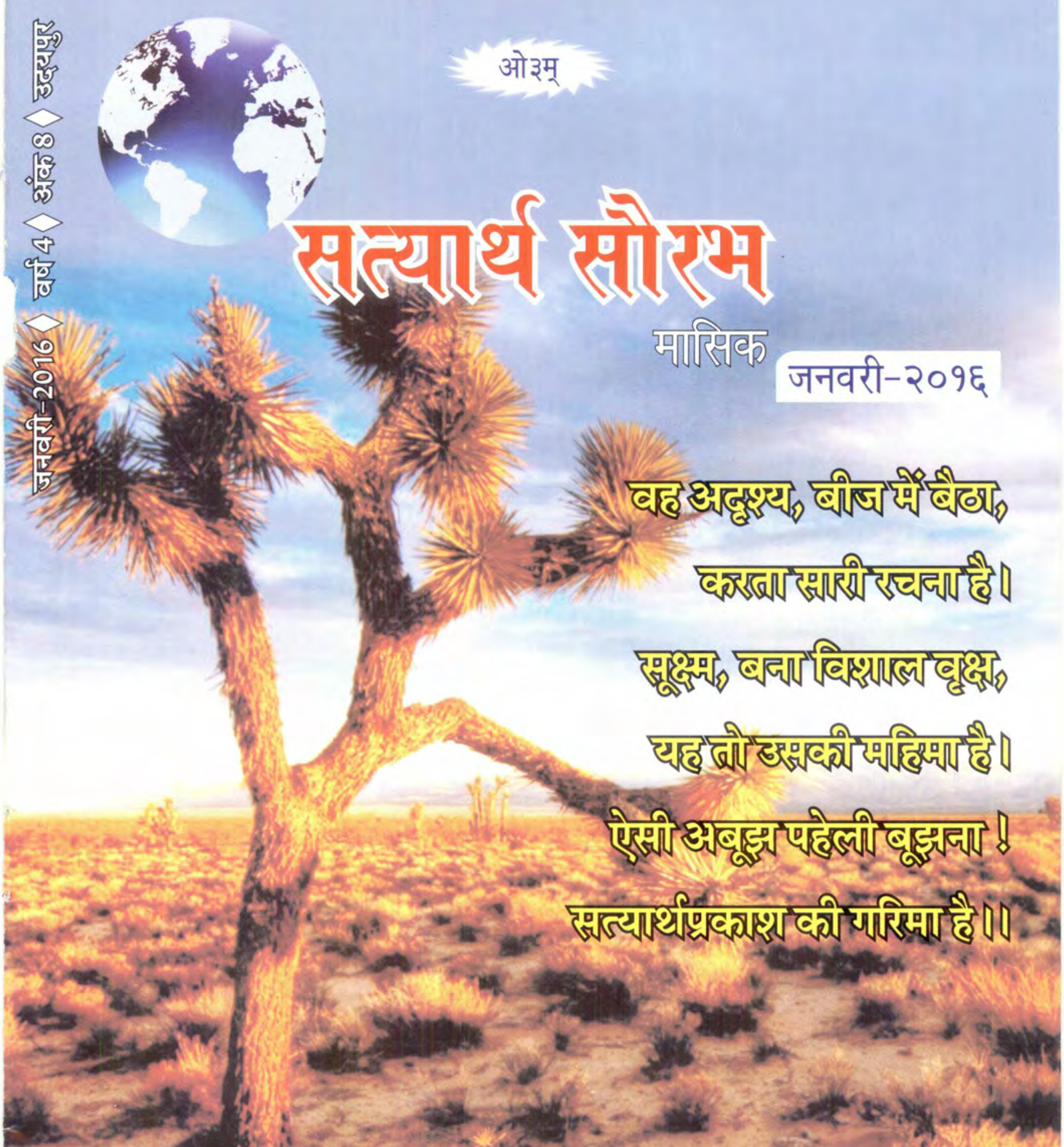

वह अदृश्य, बीज में बैठा,
करता सारी रचना है।
सूक्ष्म, बना विशाल वृक्ष,
यह तो उसकी महिमा है।
ऐसी अबूझ पहेली बूझना !
सत्यार्थप्रकाश की गरिमा है।।

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹ १० ४६

सब्ज़ी में आये स्वाद, मसाले पड़ें कम !
एम.डी.एच. मसालों में है, इतना दम !

जब आप स्वादिष्ट सब्जियों का आनन्द उठाते हैं तो जान लीजिये कि सब्ज़ी का अपना कोई स्वाद नहीं होता, स्वाद आता है मसालों से।

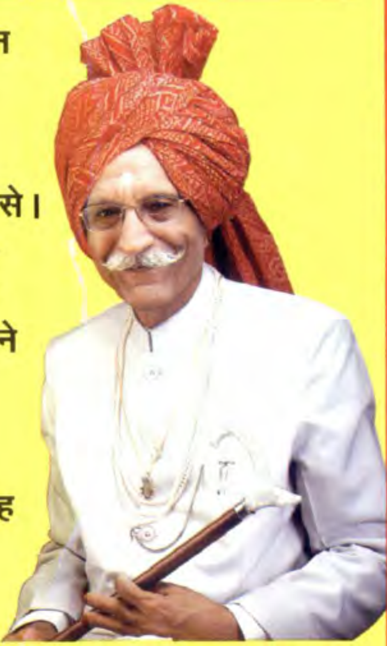

सब्जी सस्ती हो या महंगी उसका स्वाद बनता है मसाले से। सब्जी बनाने में जितनी भी चीज़ें इस्तेमाल होती हैं जैसे - सब्जी, घी - तेल, मसाले, गैस आदि, उनमें सबसे सस्ता सिर्फ मसाला ही होता है जो कि सब्जी के स्वाद को बनाने के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण होता है।

एम.डी.एच. मसाले प्राकृतिक रूप से शुद्ध एवं उत्तम क्वॉलिटी के साबुत मसालों से तैयार होते हैं, इसलिए यह दूसरों के मसालों के मुकाबले में कम पड़ते हैं।

एम.डी.एच. मसालों की श्रेष्ठ क्वॉलिटी और शुद्धता का रहस्य महाशियाँ दी हट्टी के चेयरमैन महाशय धर्मपाल जी का 80 वर्षों का अनुभव, लगन, मेहनत और मसालों की परख है। वह किसी भी मिर्च - मसाले की शुद्धता और गुणवत्ता का अनुमान उसे जरा सा हाथ में लेकर और सूंघकर कर लेते हैं। केवल बेहतरीन चुने हुए साबुत मसालों के मिश्रण से ही एम.डी.एच. मसाले बनते हैं।

MDH

मसाले

असली मसाले सच-सच

महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड

ESTD. 1919 9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली – 110015 Website : www.mdhspices.com

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

०७ बचें अन्धविश्वासों से

०४	वेद सुधा	
०६	सत्यार्थप्रकाश पहेली-२४	
११	क्रान्ति का एक और प्रयास	
१३	पृथ्वी की आकर्षण शक्ति	
१४	अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन	
१५	धर्म और विज्ञान	
२०	मोर्चा 'अंधविश्वास' के खिलाफ	
२८	कथा सरित	
२६	स्वास्थ्य- चलते रहें	
३०	स्वदेशीय राज-दर्शन	

समाचार २६

हलचल २७

January-2016

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ

महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)

डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमांसक

आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय

डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री

डॉ.सोमदेव शास्त्री

डॉ. रघुवीर वेदालंकार

आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग

नवनीत आर्य (मो.9314535379)

व्यवस्थापक

सुरेश पाटोदी (मो.9829063110)

सहयोग ◆ भारत	विदेश
संरक्षक - ११००० रु.	$ 1000
आजीवन - १००० रु.	$ 250
पंचवर्षीय - ४०० रु.	$ 100
वार्षिक - १०० रु.	$ 25
एक प्रति - १० रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच टाऊन हॉल, उदयपुर

खाता संख्या : ३१०१०२०१००४१५१८

IFSC CODE- UBIN 0531014

MICR CODE- 313026001

में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३११६

पौष कृष्ण द्वादशी

विक्रम संवत्
२०७२

दयानन्दाब्द
१९१

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर २ व ३ (भीतरी आवरण) रंगीन ३५०० रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	२००० रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	१००० रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	७५० रु.

स्वामी श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - ४ अंक - ८

मुद्रण द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.)
११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास

नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) ३१३००१

(०२९४) २४१७६९४, ०९३१४५३५३७९, ०९८२९०६३११०

www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

वेद सुधा

सन्तान कैसी हो?

इहैव स्तं मा वि यौष्टं विश्वमायुर्व्यश्नुतम्।
कीळन्तौ पुत्रैर्नप्तृभिर्मोदमानौ स्वे गृहे।। - ऋग्वेद १०/८५/४२

गतांक से आगे ....

गृहस्थ सुख का चौथा आधार है योग्य एवं सदाचारी सन्तान। गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने के पश्चात् प्रत्येक गृहस्थ दम्पती की यह स्वाभाविक इच्छा होती है कि उसके यहाँ सन्तान हो। सन्तानोतपत्ति की दृष्टि से पुत्र की ही कामना की जाती है। सभी सुख चाहते हैं और पुत्र शब्द का शब्दार्थ ही यही है कि जो माता पिता को दुःख से बचाता है। अतः पुत्रोत्पत्ति की इच्छा का प्रत्येक माता-पिता में होना स्वाभाविक है। वस्तुतः जीवन की शोभा गृहस्थाश्रम से ही है और गृहस्थ की शोभा सन्तान से और **सन्तान की शोभा उसके सदाचारी और योग्य होने में है।** सन्तानहीनता भी गृहस्थ जीवन के लिए सन्ताप है और सन्तान होकर भी सन्तान का अयोग्य एवं दुराचारी होना और भी सन्तापदायक है। पंचतंत्र में योग्य सन्तान की उत्कृष्टता और अयोग्य सन्तान की निकृष्टता का वर्णन किया गया है।

कोऽर्थः पुत्रेण जातेन यो न विद्वान्न धार्मिकः।
काणेन चक्षुषा किं वा, चक्षुः पीडैव केवलम्।।

ऐसे पुत्र के होने से क्या लाभ जो न पंडित हो और न धर्मात्मा! जैसे कानी आँख से क्या लाभ? वह तो केवल पीड़ा देती है।

अजातमृतमूर्खाणां वरमाद्यो न चान्तिमः।
स्कृद् दुःखकरावाद्यावन्तिमस्तु पदे पदे।।

बालक उत्पन्न ही न हो, या उत्पन्न होकर मर जाए अथवा मूर्ख हो- इन तीन प्रकार की स्थितियों में आदि की दो बेहतर हैं किन्तु अन्त वाला अर्थात् मूर्ख पुत्र अच्छा नहीं कहा जा सकता, क्योंकि पहले तो एक बार ही दुःख देने वाले होते हैं परन्तु अन्तिम अर्थात् मूर्ख तो पग-पग पर कष्ट देने वाला होता है।

स जातो येन जातेन याति वंशः समुन्नतिम्।
परिवर्तिनि संसारे मृतः को वा न जायते।।

उसी पुत्र को उत्पन्न हुआ समझो जिसके उत्पन्न होने से वंश उत्तम उन्नति को प्राप्त हो। क्योंकि इस परिवर्तनशील संसार में मरकर कौन उत्पन्न नहीं होता?

गुणिगणगणनारम्भे न पतति कठिनी सुसंभ्रामाद् यस्य।
तेनाम्बा यदि सुतिनी वद बन्ध्या कीदृशी भवति।।

जिस समय गुणियों की गिनती प्रारम्भ होने लगे उस समय जिस पुरुष का नाम बोले जाने पर अनामिका अंगुली न उठे, उस बालक से यदि उसकी माता पुत्रवती कहलाये तो बताओ बाँझ कैसी होती है?

दाने तपसि शौर्ये च यस्य न प्रथितं मनः।
विद्यायामर्थलाभे च मातुरुच्चार एव सः।।

जिस पुत्र का मन दान, तप, यश, शूरता, विद्या और धनोपार्जन में नहीं लगा, वह पुत्र माता के मलमूत्र तुल्य ही त्याज्य है।

वरमेको गुणी पुत्रो न च मूर्खशतान्यपि।
एकश्चन्द्रस्तमो हन्ति न च तारागणः पुनः।। - चा. नी. ३।६

गुणवान् एक ही पुत्र अच्छा है, परन्तु मूर्ख सौ भी अच्छे नहीं। चन्द्रमा अकेले ही अन्धकार को दूर कर देता है, किन्तु अनेक ताराओं का समूह भी अन्धकार को नष्ट करने में समर्थ नहीं होता।

को धन्यो बहुभिः पुत्रैः कुशूलापूरणाढकैः।
वरमेकः कुलालम्बी यत्र विश्रूयते पिता।।

भूसी भरे हुए कोठे के समान अधिक पुत्रों से कौन धन्य हुआ है? परन्तु जिस पुत्र के कारण पिता विख्यात हो जाए, अपने वंश को सहारा देने वाला ऐसा एक ही पुत्र बेहतर है।

उपर्युक्त सभी श्लोक सन्तान की योग्यता एवं सच्चरित्रता पर बल दे रहे हैं। वेद भगवान् का भी यही आदेश है-

मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्। - ऋ.१०।५३।६

तू मनुष्य बन और दिव्य गुण, कर्म और स्वभाववाली सन्तान को जन्म दे।

गृहस्थाश्रम में प्रवेश करना कोई बड़ी बात नहीं है। सन्तान का उत्पन्न होना भी कोई बड़ी बात नहीं है। इन दोनों से भी बड़ी बात है सन्तान का निर्माण। प्रायः गृहस्थ जीवन में जितना परिश्रम सन्तान के लालन-पालन, शिक्षा-दीक्षा, नौकरी और विवाह के लिए करते हैं, उतना परिश्रम सन्तान के विचारों एवं संस्कारों के परिमार्जन के लिए नहीं करते। उनमें निर्व्यसनता, कर्मकाण्ड-प्रियता और सद्व्यवहार आये, इसके लिए विशेष परिश्रम नहीं किया जाता। प्रत्येक गृहस्थ का कर्तव्य है कि इन बातों की ओर ध्यान दें।

सन्तान के निर्माण के लिए सर्वप्रथम माता-पिता को सन्तान के सम्मुख अपना आदर्शरूप उपस्थित करना चाहिए। वास्तव में जनक और जननी बनना तो सरल है, परन्तु माता-पिता बनना बहुत कठिन है। सन्तान के निर्माण में सबसे पहली कमी माता-पिता की ओर से ही होती है। यदि माँ-बाप में धीरज नहीं, उनमें प्रतिकार की भावना है, उनमें यदि कामवासना की प्रबलता है, यदि वे चोरी करते हैं, उनमें यदि राग-द्वेष की भावना है एवं उच्चता और श्रेष्ठता की भावना नहीं है, यदि वे व्यसनी हैं, यदि वे झूठ बोलते हैं और क्रोधी हैं तो निश्चित रूप से उनकी इन बुरी आदतों का प्रभाव सन्तान पर पड़े बिना नहीं रह सकता। ऐसे माता-पिता आदर्श नहीं बन सकते और न ही वे आदर्श सन्तान का निर्माण कर सकते हैं। अतः माता-पिता के संस्कार-विचार एवं आचार ऐसे होने चाहिए जो सन्तान को प्रभावित करें। कई बार ऐसा देखा जाता है कि माता-पिता तो आदर्श रूप हैं परन्तु उनके कुछ बच्चे ऐसे दूषित संस्कार लेकर उत्पन्न होते हैं जो माता-पिता के आदर्शों के विपरीत होते हैं। ऐसी सन्तान के सुधार के लिए भी माता-पिता को प्रयत्नशील रहना चाहिए।

सन्तान निर्माण का दूसरा उपाय यह है कि माता-पिता अपने बच्चों की संगति का विशेष ध्यान रखें। संगति का मनुष्य जीवन पर बहुत प्रभाव पड़ता है। माता-पिता प्रायः इस बात का ध्यान नहीं रखते कि उनकी सन्तान कैसे बच्चों के साथ हेल-मेल रखती है। माँ-बाप की लापरवाही के कारण बच्चे बुरी संगति में पड़कर ऐसी बुरी आदतों का शिकार हो जाते हैं जिनके लिए उन्हें जीवन भर पछताना पड़ता है, अतः माता-पिता को लुक-छिपकर भी इस बात का निरीक्षण करते रहना चाहिए कि वे किस प्रकार के बच्चों के साथ मिलते-जुलते हैं। जो लड़के दुश्चरित्र हों उनसे सन्तान को दूर रखने का भरसक प्रयत्न करना चाहिए। माता-पिता के अतिरिक्त गुरुजन और सरकार द्वारा निर्मित वातावरण का भी बच्चों के निर्माण पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है।

वेदमंत्र में एक पद आया है- '**क्रीळन्तो पुत्रैर्नप्तभिः मोदमानौ स्वे गृहे**' अर्थात् पुत्रों और नातियों के साथ खेलते हुए प्रसन्नतापूर्वक तुम दोनों अपने घर में निवास करो। माता-पिता का अपने पुत्रों और नातियों के साथ खेलना बहुत आवश्यक है। बच्चों के साथ खेलने और हँसने से घर का वातावरण आनन्दपूर्वक बनता है। जिस घर में माँ-बाप के कारण भय एवं संन्यास का वातावरण बना रहता है उस घर में मानो बहुत बड़ी कमी पाई जाती है। इसके साथ ही सन्तान के निर्माण के लिए कम से कम सप्ताह में एक बार उन्हें बिठाकर कुछ नैतिक उपदेश अवश्य देना चाहिए जिसमें उन्हें अच्छी अच्छी बातें बताई जाएँ जिनके आधार वे अपना भावी जीवन सुन्दर एवं स्वस्थ बना सकें।

माता-पिता जिस प्रकार की सन्तान बनाना चाहें बना सकते हैं, परन्तु इसके लिए प्रयत्न अपेक्षित है। जिन माता-पिता ने सन्तान के निर्माण का संकल्प किया, उन्हें अपने उद्देश्य में सफलता मिली है। राम, लक्ष्मण, कृष्ण, ध्रुव, हनुमान, भीष्म, आल्हा-ऊदल, गोरा बादल, शिवाजी का निर्माण अपनी माताओं के द्वारा ही हुआ। मंदालसा ने अपने तीनों पुत्र विक्रान्त, सुबाह और शत्रुमर्दन को विरक्त बना दिया और चौथे पुत्र अलर्क को क्षत्रिय बनाया। प्रद्युम्न, श्रीकृष्ण महाराज के संयम और सदाचार का ही परिणाम थे।

इन सब उदाहरणों से इस तथ्य की पुष्टि होती है कि यदि माता पिता सच्चे

हृदय से प्रयत्न करें तो सन्तान का निर्माण अवश्यम्भावी है। यदि हम प्रयत्नपूर्वक सन्तान का निर्माण करते हैं, तो हमें व्यक्तिगत हर्ष एवं पारिवारिक लाभ तो होता ही है, इससे सामाजिक उपकार भी होता है- एक स्वस्थ एवं सुन्दर समाज का निर्माण होता है। जिन गृहस्थ की सन्तान योग्य एवं सदाचारी होती है उन गृहस्थों को अपार हर्ष प्राप्त होता है। जैसे किसान अपने पके हुए खेतों को देखकर आनन्द विभोर हो उठता है, उसे जिस अपार हर्ष की अनुभूति होती है वह उसका शब्दों के द्वारा वर्णन नहीं कर सकता। यही स्थिति योग्य एवं सदाचारी सन्तानवाले गृहस्थ की होती है। इसके विपरीत जिन गृहस्थों की सन्तान अनाचारी होती है उन्हें जिस महान् क्लेश एवं दुःख की अनुभूति होती है उसे वे ही जानते हैं। उनके लिए भोजन भी विषतुल्य हो जाता है। **अतः योग्य एवं सदाचारी सन्तान के निर्माण में ही गृहस्थ की कृतकार्यता है।** क्रमशः ....

- प्रो. रामविचार एम. ए.
(साभार- वेद संदेश)

❑❑❑

सत्यार्थप्रकाश पहेली- १/१६

सत्यार्थ सौरभ सदस्य संख्या-

रिक्त स्थान भरिये- सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए। (तृतीय समुल्लास पर आधारित)- पुरस्कार प्राप्त करिये

■	१	च	■	२ नि		■	३	श	■	■
४	दा	४	न ४	■	५	श्व	५	कृ	५	■
६ आ		६ ग्र		■	■	■	७ स		७ स	७

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. अभाव कितने प्रकार का होता है?

२. जो विद्यमान हो और जिसका कारण कोई भी न हो, उसे क्या कहते हैं?

३. महर्षि दयानन्द ने कितने उपनिषदों को पढ़ने का निर्देश किया है?

४. ब्राह्मणादि का प्रमाण किनके अधीन है?

५. वेद निर्भ्रान्त तथा स्वतः प्रमाण हैं क्योंकि वे हैं?

६. वे कौन से ग्रन्थ हैं जिनके पढ़ने का सुपरिणाम होता है, जैसे एक गोता लगाना और बहुमूल्य मोतियों को पाना।

७. वेदादि सत्यशास्त्रों के स्वीकार में किसका ग्रहण हो जाता है?

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- २२ का सही उत्तर

१. द्यूत	२. वेद	३. प्रमाद	४. क्षत्रिय
५. अग्नि	६. पाँच	७. मनुस्मृति	८. सृष्टिविरुद्ध

"विस्तृत नियम पृष्ठ २५ पर पढ़ें एवं ₹५१०० पुरस्कार प्राप्त करें।"

कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ फरवरी २०१६

कर्मयोगी महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष - न्यास

कर्मयोग का साधक ही,
मंजिल अपनी पाता है।
सुख-समृद्धि बढ़ती हर दिन,
जग अपना हो जाता है।।

सत्यार्थ सौरभ
घर-घर पहुँचावें

₹5100 का पुरस्कार प्राप्त करें
"सत्यार्थ सौरभ" के सदस्य बनें

अविलम्ब बहुप्रशंसित पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ' के सदस्य बनें, जो पहले से सदस्य हैं अपना नवीनीकरण करावें और सत्यार्थ सौरभ में छप रही 'सत्यार्थप्रकाश पहेली' में भाग लेने की पात्रता प्राप्त करें और पावें ₹5100 का पुरस्कार।

पूर्ण विवरण पृष्ठ २५ पर देखें।

सर्वव्यापी अंधविश्वास

कई बार हम सोचते हैं कि जड़-पूजा का जो स्वरूप व अंधविश्वास जनित जो घटनाएँ कथाएँ हम देखते-सुनते हैं वे हमारे भारत में ही हैं क्योंकि यहाँ गरीबी और अशिक्षा ज्यादा है तथा पौराणिक परम्परा में इसके आधार भी हमें प्राप्त हैं, पर यह बात सत्य नही है। विश्वभर में विस्तृत अन्य मतों में भी 'चमत्कार को नमस्कार' की प्रवृत्ति देखने को मिलती है।

ऐसी मान्यताओं की पृष्ठभूमि में वस्तुतः प्रमुख रूप से तीन तत्व कार्य करते हैं।

प्रथम - मानव मन सामान्य तौर पर प्रत्यक्ष पर विश्वास करता है, साकार प्रतिमा में उसे अपनी श्रद्धा व्यक्त करने हेतु प्रत्यक्ष आधार मिल जाता है। इसके साथ देखा-देखी, अधिकांश द्वारा अनुकरण व दृढ़ परम्परा का निर्मित हो जाना, उसे तात्विक चिंतन तथा विश्लेषण से दूर ले जाता है। एक मनुष्य के रूप में ही ईश्वर की कल्पना व उसके साथ तथावत् व्यवहार उसे सहज लगता है तथा ऐसी ही मानसिकता वाले करोड़ों की संख्या के मध्य सृष्टि क्रम से विरुद्ध घटनाओं को भी वह तर्क से परे मानता है।

कवि बड़े विकट और तर्काधारित सटीक प्रश्न करता है -

अजब हैरान हूँ भगवन तुम्हें कैसे रिझाऊँ मैं।
कोई वस्तु नहीं ऐसी जिसे सेवा में लाऊँ मैं।।

भोग लगाने पर तंज करते हुए कवि लिखता है कि जो सारे संसार को खिलाता है उसे कैसे और क्या खिलाया जा सकता है, जो सारे संसार को प्रकाशित करता है उसे दीपक दिखाने का कार्य बाल-बुद्धि ही कहा जावेगा। पर ये प्रश्न हमारी विचारतन्त्री को संभवतः झकझोरते नहीं हैं, अतः जड़-पूजा स्थलों पर एक जैसे दृश्य दिखायी पड़ते हैं यथा भगवान् को भोग लगाना, नहलाना, कपड़े पहनाना, शयन कराना, पंखे झलना, कूलर लगाना यहाँ तक कि यह मानकर कि एक ही स्थान पर बैठे-बैठे ठाकुर जी बोर हो गए होंगे, उन्हें कभी-कभी बाहर भ्रमण भी कराना आदि-आदि। इसकी विस्तार से चर्चा इस आलेख का उद्देश्य नहीं है। **बात हम यह कहना चाहते हैं कि जड़-पूजा से जुड़ी यह स्थिति भारत में ही नहीं बाहर भी है।**

लगभग एक वर्ष पूर्व हम बैंकाक गए थे, वहाँ पटाया में एक प्रसिद्ध बौध मंदिर है, वहाँ का दृश्य भारत से बिलकुल भी अलग नहीं था। मूर्तियों पर और तो और मिनिरल वाटर तथा कोल्ड ड्रिंक का भोग लगा हुआ था। एक बौद्ध भिक्षु हाथ में एक बाँस की झाड़ू सी लेकर लोगों के सिरों पर रख-रख कर उनकी समस्याओं को दूर कर रहा था। ठीक यहाँ जैसा माहौल। भीड़ की रेलमपेल। अस्तु।

दूसरी बात जो ऐसे स्थलों से जुड़ी हुई है वह है हर स्थल के महत्त्व व महात्म्य की अपनी गाथा। आज तक हमने ऐसा एक भी इस श्रेणी का स्थल नहीं देखा जहाँ के महत्त्व की अतिवादी चर्चा न की गयी हो तथा आगन्तुकों को प्रत्यक्ष व तुरंत लाभ की गारंटी न दी जाती हो। **यही वह लोभ है जो शंकालुओं को भी, शिक्षितों को भी, तार्किकों को भी लाइन में लगवा देता है।**

इसी में तीसरी बात का तड़का लगाकर उपस्थिति-वृद्धि को सुनिश्चित कर दिया जाता है, वह है चमत्कार। जो भी प्रबंधन इन तीनों फैक्टर्स की जितनी अच्छी मार्केटिंग कर लेगा उतनी ही भीड़ उसके द्वारा नियंत्रित स्थलों पर आयेगी।

यह श्रद्धा मन की मुराद पूरी करने की आशा का प्रत्यक्ष परिणाम है। यह दावा केवल हिन्दू धर्मस्थलों के सम्बन्ध में है ऐसा समझना भारी भूल होगी। **मुस्लिम तथा ईसाई धर्मस्थल भी चमत्कार तथा मनौती पूरी करने के दावे से उत्सर्जित आक्सीजन पर श्वांस ले रहे हैं।**

क्योंकि 'मेरे सारे दुःख तुरंत दूर हो जायँ', यह ऐसी कामना है जिससे कौन बचा है? हाँ, जो कार्य-कारण सिद्धांत को अटल मानता है,

परमेश्वर की कर्मफल व्यवस्था में जिनका अटल विश्वास है, जो सृष्टिक्रम से विरुद्ध को असंभव मानते हैं उनकी बात भिन्न है, अन्यथा तो विपत्ति के समय, जहाँ से भी जैसे भी राहत मिले वैसा करने को अच्छे से अच्छे शिक्षित और तर्कशील लोग तैयार होते देखे जाते हैं। यह चमत्कार मेरे साथ हुआ है अथवा ऐसा मैंने साक्षात् देखा है, कहने वाले उत्प्रेरक तत्व के रूप में काम करते हैं। ऐसे तथाकथित चमत्कारों की अनेकानेक कारणों से कभी पूर्ण वैज्ञानिक तथा निर्दोष पद्धति से परीक्षा न होने से भ्रम-भंजन हो नहीं पाता, यही कारण है कि हिन्दू महिलाएँ हिन्दू धर्मस्थलों पर ही नही मुस्लिम धर्मस्थलों की शरण में बहुतायत से जाती देखी जाती हैं।

ऐसे स्थलों के अस्तित्व में आने के सम्बन्ध में भी ऐसी चमत्कारिक पृष्ठभूमि बतायी जाती है कि वे श्रद्धालुओं को अधिकाधिक आकर्षित कर सकें। **महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश के ११ वें समुल्लास में कुछ स्थलों से जुड़ी कहानियों की समीक्षा की है। यह यथार्थ समीक्षा वे इस कारण कर पाए क्योंकि उन्होंने उन स्थलों की वास्तविकता तथा चमत्कार की असलियत को अपनी आँखों से देखा था। उन्होंने ज्योतिर्लिंग, जगन्नाथ के मंदिर, ज्वालादेवी आदि के चमत्कारों का विश्लेषण सत्यार्थप्रकाश में किया है। विशेष जानकारी के लिए पाठकों को ये स्थल अवश्य पढ़ने चाहिए।**

ठीक यही स्थिति हमें मुस्लिम तथा ईसाई धर्मस्थलों के सन्दर्भ में दिखाई दी। उसकी थोड़ी चर्चा यहाँ करेंगे। अजमेर की एक दरगाह के बारे में तो सभी जानते हैं। ख्वाजा साहब की दरगाह। वहाँ उर्स के अतिरिक्त भी मन्नतें माँगने वालों का तांता लगा रहता है।

एक दरगाह तारागढ़ के किले पर है। हमें पृथ्वीराज चौहान का किला देखना था। जब वहाँ पहुँचे तो एक शिष्ट नौजवान ने हमारी जिज्ञासा के उत्तर में कहा कि आपको दरगाह में होकर जाना पड़ेगा, लगे हाथ दरगाह के दर्शन भी कर लीजिये। रास्ते में वह जगह का महात्म्य तथा वहाँ के चमत्कार बताने लगा। उसके अनुसार मीराबाई की माताजी मनौती मानने वहाँ आयीं थीं और मन्नत पूरी होने पर पुनः चादर चढ़ाने आयी थीं। उसके अनुसार जिसने भी यहाँ आकर मन्नत मानी वह अवश्य पूरी हुई। वहाँ मुख्यस्थल पर बहुत सारे धागे ठीक उसी प्रकार बंधे थे जैसे हिन्दू धर्मस्थलों, पेड़ों पर बंधे रहते हैं। उसके अनुसार मन्नत माँगने वाले इन्हें बाँध कर जाते थे तथा अभिलाषा पूरी होने पर उन्हें खोलने भी आते हैं। **उस नवयुवक ने यह भी बताया कि विशिष्ट दिनों में समाधि स्थल जोर-जोर से हिलता है। वहाँ घुड़सवारों की कई समाधियाँ हैं पर चमत्कार यह है कि उनकी संख्या घटती बढ़ती रहती है। बकौल उसके आप कभी भी गिन लें कभी गिनती एकसी नहीं होगी।** इतना सब सुनते-सुनते एक दरवाजे के पास ले जाकर उसने बताया कि यह पृथ्वीराज के किले का बचा एकमात्र दरवाजा है जिसे सरकार ने संरक्षित घोषित किया हुआ है। देखने तो गए थे किला और देख सुनली दरगाह की कहानी। लाभ यह हुआ कि यह धारणा और पुष्ट हुई कि मत-मतान्तरों में भीड़ जुटाने तथा मान्यता वृद्धि के लिए एक ही जैसे उपाय प्राप्य हैं। तारागढ़ की दरगाह में हजरत मीरां सैयद हुसैन असगर खान्स्वार की समाधि है। जिज्ञासा हुई कि इन सूफी संत की क्या कहानी थी? उस युवक ने इन सूफी साहब की उदारता तथा सहिष्णुता की भूरि-भूरि प्रशंसा की। हमने इतिहास के कुछ पन्नों में झाँकने का प्रयास किया। आश्चर्य हुआ कि वो कोई दरवेश नहीं थे वह तो सैनिक था। वह शहाबुद्दीन गौरी का सेनानी था। जब शहाबुद्दीन ने अजयमेरु (अजमेर) पर अधिकार कर लिया तो इन मीरां सैयद हुसैन असगर खान्स्वार को वहाँ का गवर्नर नियुक्त कर दिया था। जब एक दिन मीरां सैयद हुसैन असगर खान्स्वार के अधिकांश सैनिक राजस्व वसूली करने बाहर गए थे तो मीरां सैयद हुसैन असगर खान्स्वार के साथ-साथ किले के अन्दर रह गए चन्द सिपाहियों का कत्ल राजपूतों ने कर अपनी हार का बदला लिया। एक सेनानी ने दरवेश की उपाधि कैसे प्राप्त की? जो जिन्दगी भर युद्ध करता रहा वह चमत्कार करने वाला संत कैसे बन गया? इस बारे में एक लम्बी कहानी गढ़ी गयी है। अजमेर के राजा से क्रुद्ध हो बदला लेने को तत्पर एक फकीर की सहायतार्थ गौरी के आदेश पर मीरां सैयद हुसैन असगर खान्स्वार निकाह के दौरान बीच में उठकर हिन्दुस्तान आ गए और अजमेर को फतह किया। इसी में अनेक चमत्कार जोड़ दिए गए। जैसे कि नमाज पढ़ रहे मीरां सैयद हुसैन असगर खान्स्वार

पर जब एक वजनी पत्थर फैंका गया तो अंगुली के इशारे से उसे मीरां सैयद हुसैन असगर खान्स्वार ने बीच में ही रोक दिया जो आज भी उसी स्थिति में है, जिसे अधरशिला कहा जाता है।

तो चमत्कारों एवं सृष्टि विरुद्ध नियमों के कथन के बिना इन मजहबों की स्थिति नहीं है। सबसे बड़ी बात है कि कुरआन में इस बात को सिद्धांततः स्वीकार कर लिया गया है कि खुदा न सिर्फ मौजिजे और खुली निशानियाँ पैगम्बरों को देता है बल्कि आवश्यकता पड़ने पर अपनी तरफ से अपनी सत्ता को सिद्ध करने हेतु चमत्कार दिखाता रहता है। यही स्थिति बायबिल की है। ज्ञान-विज्ञान विरुद्ध सैकड़ों बातें इनमें भरी पड़ीं हैं। ईसा मसीह को भी ऐसी चमत्कारिक शक्तियों का स्वामी बताया गया है , वह स्पर्श मात्र से असाध्य रोगियों को ठीक कर देते थे, अब यह शक्ति चर्च के पादरियों में भी आ गयी है। वे तो स्पर्श के बिना भी दूरस्थ रोगियों को ठीक कर देते हैं। हमने ऐसी प्रार्थना सभा स्वयं देखी है जिसमें अंधों की आँख ठीक कर दी गयीं ऐसे अंधे को मंच पर बुला कर उसकी साक्षी भी दिलवायी गयी। **पर उस प्रार्थना सभा में लगातार सात दिन तक आने के बाद भी एक ऐसी विकलांग बालिका जिसे हम पूर्व से जानते थे यथास्थिति में बनी रही, उसकी स्थिति में रत्ती भर भी सुधार नहीं हुआ। पाठक असलियत क्या है समझ सकते हैं।**

ऐसे सभी स्थानों पर भारी भीड़ रहती है जो स्वयं आगे के लिए मार्केटिंग का कार्य करती है। 'नकटे को ईश्वर दर्शन' की कथा की तरह प्रायः ऐसे भक्तगण अपनी मुराद पूरी होने की पुष्टि भी कर देते हैं। यहाँ कोई तर्क नहीं चलता, विज्ञान का यहाँ कोई दखल नहीं है। बस जरा पता चलना चाहिए कि कहीं खडाऊँ स्वयं चलने लग गयी हैं, कहीं हनुमान जी की प्रतिमा रोने लग गयी है, कहीं मरियम की प्रतिमा रोने लग गई है, अंधविश्वास को आस्था का नाम देकर स्वयं को सही होने का आश्वासन देने वाले लोग भारी संख्या में पहुँच जाते हैं और देखते ही देखते एक नए तीर्थ का सृजन हो जाता है।

सभी मतों में गुरुओं बाबाओं की भी यही स्थिति है। दरगाहें मुराद पूरी करती हैं तो पादरी महोदय चंगाई। एक भी ऐसा बाबा नहीं जो इन अलौकिक शक्तियों से लैस न हो। और अगर कोई है तो फिर वह धन सम्पन नहीं हो सकता।

हम न किसी की आलोचना करना चाहते हैं न किसी का दिल दुखाना। पर चिंतन मनन हेतु तर्काधारित सत्य पर विचार करने हेतु प्रेरित करना हमारा कर्तव्य है। अभी कुछ दिनों पूर्व अत्यन्त प्रसिद्ध एक गुरु के बारे में बी.बी.सी. द्वारा निर्मित एक डोक्यूमैंट्री देखने में आयी। उसमें प्रमाण सहित बाबा के चमत्कारों की तो पोल खुली ही है साथ ही उनके जीवन के अनखुले पन्ने भी सामने आये हैं जिनका अन्वेषण तत्समय में प्रभावशाली लोगों के दबाव में नहीं हो पाया। एक धारावाहिक ऐसे संत पर बनाया गया जिसमें प्रत्येक एपिसोड चमत्कारों से युक्त था।

ऐसे सभी धर्मस्थलों, गुरुओं, मजहबों से जिस दिन गढ़े गए चमत्कारों की कहानियों को, उस स्थल पर आने से या दर्शन लाभ करने से होने वाले लाभों के वर्णनों को हटा दिया जावेगा तब किस स्थल पर कितनी भीड़ होगी यह देखने वाली बात होगी।

स्थिति यह है कि विश्वभर से आये दिन ऐसे चमत्कारों की घटनाएँ सामने आती रहती हैं। यहाँ कुछ बानगी प्रस्तुत है -

१९९६ की बात है। १९ जनवरी शनिवार का दिन था। राजकोट (गुजरात) के एक स्थानीय हनुमान मंदिर में हनुमान जी की आँख से आँसू बहने लगे। वायु-वेग से इस चमत्कार की खबर फैल गयी। रात होते-होते भारी भीड़ इकट्ठी हो गयी। जैसे तैसे पुलिस प्रशासन को बुलाया गया। प्रशासन ने भीड़ को काबू में किया। आलम ये था कि लोगों ने अपनी झोलियाँ खोल दीं। दान देने लगे।

बनारस में भी एक सज्जन श्री नन्दलाल शर्मा के घर में स्थित हनुमान मंदिर में भी मूर्ति के आँसू बहने लगे। भक्तों की भीड़ का क्या कहना? नंदलाल का कहना था कि जब उसके बेटे ने उसे आँसू वाली बात बतायी तब उसे विश्वास नहीं हुआ पर जब उसने देखा तो यह सच था। उसने मूर्ति के चेहरे को पानी से धोया फिर भी हनुमान जी के आँसू बह रहे थे।

उधर भगवान् कृष्ण की लीला स्थली भी क्यों पीछे रहे। वहाँ एक छोटे गाँव में भी हनुमान जी रोने लगे। हमें आशा है कि पाठकगण को गणेश जी का दूध पीना याद होगा ही।

जड़ वस्तु में भावनाएँ उत्पन्न होना फलस्वरूप पत्थर अथवा लकड़ी की बनी प्रतिमा का रोना सृष्टिक्रम से विरुद्ध तथा असंभव है, पर यही तो वे साधन हैं जिनसे आस्था के नाम पर भारी भीड़ को आकर्षित किया जाता है तथा उनका बौद्धिक तथा अन्य प्रकार का शोषण किया जाता है। ऐसी चमत्कारी घटनाएँ भारत अथवा हिन्दुओं के यहाँ ही नहीं होतीं, इनसे कोई भी नहीं बचा है।

जापान के अकीता में सिस्टर एग्नस कतुस्को को पवित्र मेरी स्वप्न में दिखने लगीं। २८ जून १९७३ को सिस्टर एग्नस के बाएँ हाथ के अन्दर की ओर क्रास की शक्ल का घाव उभर आया और इससे काफी मात्रा में खून बहने लगा तथा सिस्टर को असह्य वेदना भी हुई। ६ जुलाई को एग्नस ने प्रार्थना करते हुए पवित्र मेरी के लकड़ी के स्टेचू से आवाज आती सुनी। उसी दिन कुछ अन्य सिस्टर्स ने स्टेचू के सीधे हाथ से खून की बूँदें टपकते देखीं। स्टेचू का यह घाव २९ सितम्बर तक रहा फिर गायब हो गया। परन्तु उसी दिन स्टेचू के माथे तथा गले से पसीना निकलने लग गया। दो वर्ष पश्चात् ४ जनवरी ७५ को प्रतिमा रोने लग गयी। ६ वर्ष ८ महीने तक कुल १०१ बार प्रतिमा ने रुदन किया, साथ ही यह भी हुआ कि सिस्टर एग्नस जो पूरी तरह बहरी थी, पूर्ण ठीक हो गयी। अकीता विश्वविद्यालय में प्रतिमा से निकले खून, पसीने की जाँच की बताते हैं तथा जाँच रिपोर्ट में सभी चीजों को मानवीय बताया गया, ऐसा कहा जाता है। **लकड़ी की प्रतिमा से मानवीय उत्पाद? संभव नहीं।** अगर रिपोर्ट सही है तो फिर एक अन्य घटना की तरह किसी की जालसाजी की इसमें पूरी-पूरी संभावना है। पर आगे चर्च कर्मचारियों के डी.एन.ए.का मिलान तथा तुलनात्मक शोध नहीं किया गया। जून ८८ में पोप बेनीडिक्ट १६ ने इस चमत्कार पर अपनी मोहर लगा दी अतः अब ईसाई समुदाय इस पर कोई अंगुली नहीं उठा सकता। हमने ऐसे चमत्कार के पीछे इंसानी दिमाग की बात यूँ ही नहीं कही।

रोम में फोरिल में मार्च २००९ में सांता लूसिया चर्च के कस्टोडियन ने प्रसिद्ध किया कि पवित्र मेरी की प्रतिमा रोयी और उसकी आँखों से खून निकला। इस कस्टोडियन का नाम विन्सेंजो डी कोस्तेंजो था। यह कस्टोडियन अन्य की तरह भाग्यशाली नहीं निकला पुलिस ने इसकी सघन जाँच की तथा पाया कि विन्सेंजो डी कोस्तेंजो स्वयं अपना खून इस कार्य के लिए काम में लाया था। **विधि विज्ञान विशेषज्ञों ने सघन जाँच में पाया कि प्रतिमा से जो खून का नमूना लिया था उसका डी.एन.ए. तथा विन्सेंजो डी कोस्तेंजो की लार का डी.एन.ए. आपस में मिलते थे।** नतीजतन विन्सेंजो डी कोस्तेंजो पर अपवित्रीकरण का मुकद्दमा चलाया गया। ऐसी सैंकड़ों सहस्रों घटनाएँ होती रहती हैं। पर निश्चित सिद्धांत यह है कि कार्य-कारण सम्बन्ध और सृष्टिक्रम के विरुद्ध कुछ भी नहीं होता। भली प्रकार वैज्ञानिक तरीके से गंभीर व स्वतन्त्र जाँच की जाय तो हर चमत्कार के पीछे इंसानी दिमाग की मौजूदगी देखी जा सकती है अथवा कुछ एक प्राकृतिक ऐसी स्थितियाँ हो सकती हैं जिनकी अभी वैज्ञानिक व्याख्या नहीं की जा सकी है, पर ऐसे चमत्कार से आपका भाग्य बदलने वाला है यह तो कम से कम भूल जायँ। तनिक चतुराई से ऐसा भ्रम पैदा किया जा सकता है।

इटली के तीन वैज्ञानिकों ने चाक, हाईड्रेटेड लोहे तथा नमक के पानी से ऐसा मिश्रण बनाया जो कि तनिक हिलाने पर लहू जैसा गीला हो जाता है पश्चात् स्थिर होने पर सूख जाता है। एक अन्य वैज्ञानिक जान फिशर ने तेल-मोम तथा रंग को मिला ऐसा मिश्रण तैयार किया जो तापमान बढ़ने के साथ पिघलकर बहने लगता है।

विश्व में अनेक जगह ऐसे अंधविश्वासों से जन-जन को वैज्ञानिक तर्कों व प्रायोगिक तरीकों के सहाय से, बचाने के प्रयास चल रहे हैं। **हमारे विचार से इस बौद्धिक विनाश को रोकना आर्यसमाज का प्राथमिक कार्य होना चाहिए। पर यह कार्य आज के युग में केवल लेखनी हिला देने से संभव नहीं है। ऐसी हर घटना के तार्किक व वैज्ञानिक विश्लेषण हेतु पूरा सुविधा सम्पन्न प्रकल्प तैयार किया जाकर, उस निष्कर्ष को जन-जन तक पहुँचाने का प्रबंध आज के युग की शैली से कदमताल करते हुए करने के ठोस प्रयास होने चाहिए।**

- अशोक आर्य
चलभाष- ०९३१४२३५१०९, ०९००१३३९८३६

❑❑❑

सन् १८५७ के स्वतंत्रता संग्राम के बाद एक और हुआ वैसा ही प्रयास

खुशहाल चन्द आर्य

सन् १८५७ के स्वतंत्रता संग्राम को तो हर एक थोड़ा पढ़ा लिखा भारतीय भी जानता है कि सन् १८५७ में एक सुसंगठित व योजनाबद्ध स्वतंत्रता संग्राम हुआ था जिसका नेतृत्व झांसी की रानी लक्ष्मी बाई, तात्या टोपे, नाना साहब, राजा कुंवर सिंह, राव तुलाराम आदि ने किया था। मूल में इसे उत्साहित करने वालों में स्वामी पूर्णानन्द (स्वामी विरजानन्द के गुरु) स्वामी विरजानन्द जी और महर्षि दयानन्द के नाम भी आते हैं। इस संग्राम के करने की तारीख ३१ मई १८५७ रख दी गई, परन्तु मंगल पाण्डे ने जल्दबाजी में एक अंग्रेज अफसर को गोली मारकर २६ मार्च १८५७ को ही ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध विद्रोह की घोषणा कर दी जिससे योजना का भण्डाफोड़ हो गया और अंग्रेजों ने इस विद्रोह को बड़ी क्रूरता से दबा दिया और इसको सैनिक विद्रोह घोषित कर दिया। परन्तु यह सैनिक विद्रोह नहीं था बल्कि एक योजनाबद्ध तरीके से सब सैनिक छावनियों में स्वतंत्रता की भावना फैलाकर उनमें विद्रोह की भावना भर दी थी साथ ही गाँव-गाँव और शहर-शहर में भी यही भावना गुप्त रूप से फैलाकर एक निश्चित दिन ही पूरे भारत में एक साथ विद्रोह करने की योजना थी जिसे मंगल पाण्डे की जल्दबाजी ने असफल कर दिया। चालीस वर्षों तक अंग्रेजों के दमन चक्र के कारण भारत में किसी ने भी सिर उठाने का साहस नहीं किया। सन् १८५७ में पूना में प्लेग फैलने पर मकान खाली कराने के बहाने मिस्टर रैण्ड ने भारतीयों पर बड़े अत्याचार किए और उनके मान-सम्मान को भी आघात पहुँचाया। उसकी हत्या करके बदला लिया दो सगे भाईयों दामोदर चापेकर व बालकृष्ण चापेकर ने और तीसरे भाई वासुदेव चापेकर ने उन दो द्रविड़ भाई जिन्होंने विश्वासघात करके चापेकर बन्धुओं को फाँसी दिलवाई थी, उन मुखबिरों को गोली से उड़ा दिया। इस प्रकार आजादी के लिए तीनों सगे भाई फाँसी पर खुशी-खुशी झूल गए। इसके बाद श्यामजी कृष्ण वर्मा जिन्होंने महर्षि दयानन्द सरस्वती से देशभक्ति सीखी थी और उन्हीं की प्रेरणा से वे इंग्लैण्ड ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में संस्कृत के प्रोफेसर बने और १६०५ में क्रान्तिकारियों के आवास के लिए इंडिया हाउस की स्थापना की जिसमें भारत के सभी क्रान्तिकारी जो इंग्लैण्ड जाते थे ठहरते थे। इनमें लाला लाजपत राय, भाई परमानन्द, लाला हरदयाल एम.ए., वीर सावरकर आदि मुख्य थे जो यहाँ रहकर आगे की योजना बनाते और भारत के क्रान्तिकारियों को सहयोग भी भेजा करते थे। यहीं पर रहकर मदनलाल ढींगरा ने १ जुलाई १६०६ में सर विलियम कर्जन वाईली जो भारतीय क्रान्तिकारियों को पथ-भ्रष्ट करता था, उसकी गोली मारकर हत्या की। यहीं पर रहकर सरदार ऊधम सिंह ने माइकेल ओडायर जिसने १६१६ में जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड करने वाले जनरल डायर की प्रशंसा की थी। जनरल डायर पहले ही अपनी मृत्यु से मर चुका था इसलिए माइकेल ओडायर को २१ साल

बाद १३ मार्च १६४० को मारकर फिर स्वयं ३१ जुलाई १६४० को अपने हाथों फाँसी के फन्दे को अंगीकार करके अपने जीवन को सार्थकता प्रदान की।

श्याम जी के ऊपर ब्रिटिश सरकार के गुप्तचरों की कड़ी नजर रहने के कारण वर्मा जी १६०७ में इंडिया हाउस की पूरी जिम्मेवारी वीर सावरकर पर छोड़कर स्वयं इंग्लैण्ड छोड़कर पेरिस (फ्रांस) चले गए और १६१४ तक वे पेरिस में रहे। १६१४ में प्रथम विश्व युद्ध छिड़ जाने से इंग्लैण्ड का दबाव पड़ने से वर्मा जी पेरिस से स्विट्जरलैण्ड में जेनेवा चले गए और वहीं पर क्रान्तिकारियों का हृदय सम्राट ३१ मई १६३० को स्वर्ग सिधार गया।

वर्मा जी के पेरिस जाने के बाद इंडिया हाउस का काम वीर सावरकर ने बड़ी जिम्मेदारी से संभाला और वहीं बैठकर वीर सावरकर ने सन् १८५७ को अंग्रेजों द्वारा सैनिक विद्रोह बताये गये विद्रोह को स्वतंत्रता संग्राम की संज्ञा देकर एक

पुस्तक लिखी जिसके ऊपर अंग्रेजों ने छपने से पहले ही प्रतिबन्ध लगा दिया। इस पुस्तक के लिखने के कारण क्रान्तिकारियों का प्रेरणादायक मानकर वीर सावरकर को दो जन्मों यानि ५० वर्षों की सजा देकर मोरिया नामक पानी के जहाज द्वारा लन्दन से भारत लाया जा रहा था तब यह जानकर कि मुझे मृत्यु पर्यन्त जेल में ही सड़ना पड़ेगा इस स्थिति से बचने के लिए उन्होंने एक अद्भुत साहस का परिचय दिया। वे जहाज के पखानाघर की खिड़की से समुद्र में कूद गए और संगीनों के साये में समुद्र में तैरते हुए फ्रांस के तट पर पहुँच गए। यह घटना संसार के इतिहास की एक प्रमुख घटना है। अंग्रजों के भय से फ्रांस ने सावरकर को अंग्रेजी सरकार को सौंप दिया। अंग्रेजी सरकार ने उनको १९२० से १९२१ तक कालापानी की जेल में रखकर अमानवीय कठोर दण्ड दिया फिर रत्नागिरी की जेल में रखा और फिर १९३७ में जेल से रिहा किया। इसके बाद भी सावरकर उन्नीस साल और जीवित रहे पर भारत की कांग्रेस सरकार ने उनका कोई सम्मान न करके अपनी कृतघ्नता का ही परिचय दिया।

इसके बाद खुदीराम बोस और प्रफुल्ल कुमार चाकी दो युवा क्रान्तिकारी आते हैं जिन्होंने मिस्टर किंग्स को जो देश भक्तों व क्रान्तिकारियों को सख्त से सख्त सजा देने लिए प्रसिद्ध था उसके ऊपर मुज्जफरपुर में ३० अप्रैल १९०८ को बम फेंका परन्तु वह बम फोर्ड की गाड़ी में न लगकर एक दूसरी गाड़ी में लगा जिसमें दो अंग्रेज रमणियाँ थीं। एक श्रीमती केनेड़ी, दूसरी कुमारी केनेड़ी दोनों वहीं ढेर हो गईं। इसके बाद अलीपुर षड्यंत्र के लिए कन्हाई लाल दत्त और सत्येन्द्र बसु को १० नवम्बर १९०८ को फाँसी दे दी गई। तत्पश्चात् २३ दिसम्बर १९१२ को लार्ड हार्डिंग के सजे हुए हाथी पर निकल रहे जुलूस पर दिल्ली के चाँदनी चौक में रास बिहारी बोस के नेतृत्व में बम फेंका गया जिसमें लार्ड हार्डिंग तो बच गया महावत मारा गया। परन्तु इससे सारे भारत में क्रान्ति की आग जल उठी और अंग्रेजों ने भी इसका बड़ी क्रूरता से दमन किया। इसी समय लाहौर में भी दो जगह बम फेंके गए जिससे पूरे भारत के क्रान्तिकारियों को पकड़ना आरम्भ कर दिया जिसमें भाई बाल मुकुन्द जो भाई परमानन्द का चचेरा भाई था, मास्टर अमीचन्द, मिस्टर अवध बिहारी लाल और बसन्त कुमार विश्वास जिसने लार्ड हार्डिंग के जुलूस पर बम फेंका था। इन चारों को पकड़ लिया गया। रास बिहारी बोस किसी प्रकार से बचने में सफल हो गया और इन चारों को फाँसी दे दी गई।

सन् १९१४ में प्रथम विश्वयुद्ध की चिंगारी जल उठी थी तब अंग्रेजी सरकार का ध्यान विश्वयुद्ध की ओर बँटा हुआ देखकर भाई परमानन्द के निर्देशन में कपूरथला के एक मंदिर

में एक विशेष बैठक का आयोजन किया गया जिसमें रास बिहारी बोस, शचीन्द्र नाथ सन्याल, करतार सिंह सराभा, विष्णु, गणेश पिंगले जो दक्षिण भारत का युवा क्रान्तिकारी था भाई परमानन्द, लाला हरदयाल एम.ए. मुख्य थे। इन्होंने मिलकर यह विचार किया कि यदि हम सैनिक छावनियों में अंग्रेजों के विरुद्ध स्वतंत्रता की भावना भर देवें तो सब सैनिक छावनियों में एक साथ विद्रोह हो जायेगा। शहरों और गाँवों में भी स्वतंत्रता के भाव भर देवें तो सारे भारत में अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह खड़ा हो जायेगा तब अंग्रेज दोनों तरफ ध्यान नहीं दे सकेंगे और उन्हें भारत को आजाद करना ही पड़ेगा। सन् १८५७ जैसी योजना पर विचार करके क्रान्तिकारियों द्वारा आगरा, कानपुर, इलाहाबाद, वाराणसी, लखनऊ, लाहौर, फिरोजपुर आदि सैनिक छावनियों से सम्पर्क किया तथा गाँवों व शहरों में घूम-घूम कर फरवरी १९१५ के दिन एक साथ विद्रोह करने का निश्चित भी कर दिया। परन्तु इन्हीं के एक साथी कृपाल सिंह ने गद्दारी की और उसने कुछ लालच लेकर निश्चित दिन से कुछ पहले पुलिस को खबर देकर सारी योजना का भण्डाफोड कर दिया। पुलिस का दमन चक्र चला और खोज-खोज कर क्रान्तिकारियों को पकड़ा जाने लगा। सैनिक छावनियों के सैनिकों से हथियार छीन लिए गए तथा उनको भी जेलों में डाल दिया गया। क्रान्तिकारियों में से रासबिहारी बोस तो किसी प्रकार देश से निकलकर जापान चले गए और वहीं बस गए। जिसने द्वितीय विश्व युद्ध के समय भारतीय सैनिक जो जर्मन, जापान के विरुद्ध अंग्रजों की ओर लड़ रहे थे उनकी आजाद हिन्द फौज बनाकर सन् १९४२ में सुभाष चन्द्र बोस के सुपुर्द कर दी। बाकी २४ क्रान्तिकारियों को पकड़ लिया गया जिनमें १७ क्रान्तिकारियों में कुछ को कालापानी की सजा मिली कुछ को छोड़ दिया गया। कालापानी की सजा वालों में विशेष नाम भाई परमानन्द का है और सात क्रान्तिकारियों को फाँसी पर चढ़ने वालों में एक करतार सिंह सराभा दूसरा पिंगले का नाम मुख्य है जिन्होंने बड़ी प्रसन्नता के साथ फाँसी के फन्दे को चूमा। इस प्रकार देश को स्वतंत्र करवाने का दूसरा प्रयास भी असफल होकर समाप्त हो गया।

मेसर्स गोविन्द राम आर्य एण्ड सन्स

१८० महात्मा गाँधी रोड,दोतल्ला, कोलकाता- ७०००००७

पृथ्वी की आकर्षण शक्ति का आधार वेद

डॉ. ब्रजमोहन जावलिया

सत्यार्थ सौरभ (दिसम्बर २०१३) में डॉ. भवानी लाल भारतीय का 'भारत के पुरातन वैज्ञानिक गणितज्ञ तथा खगोलशास्त्री भास्कराचार्य' लेख पढ़ा। भारतीय जी ने भास्कराचार्य का जन्म ११६४ वि. में होना लिखा है जबकि भारतीय ज्ञानपीठ काशी से प्रकाशित भारतीय ज्योतिष पुस्तक के प्रणेता नेमिचन्द्र शास्त्री, ज्योतिषाचार्य ने उनका जन्म १११४ ई. में होना लिखा है। भास्कराचार्य लीलावती बीजगणित, सिद्धान्त शिरोमणि, करण कुतूहल, सर्वतोभद्र आदि के रचयिता थे। डॉ. भारतीय जी के अनुसार वैज्ञानिक जगत् में पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण शक्ति के सर्वप्रथम आविष्कारक अंग्रेज वैज्ञानिक सर आइजक न्यूटन थे। जबकि १६६८ ई. से भी ५०० वर्ष पूर्व भास्कराचार्य ने पृथ्वी की इस आकर्षण शक्ति की खोज की थी।

भास्कराचार्य ने स्वरचित 'सिद्धान्त शिरोमणि' ग्रन्थ (भुवन कोश ६) में पृथ्वी की आकर्षण शक्ति के विषय में लिखा है कि पृथिवी ऊपर की भारी वस्तु को अपनी ओर खींच लेती है। उसके द्वारा आकर्षित वस्तु आकाश से गिरती हुई सी प्रतीत होती है। यथा

आकृष्टशक्तिश्च मही तथा
यत् खस्थं गुरु स्वाभिमुखं स्वशक्त्या।
आकृष्यते तत्पततीव भाति समे समन्तात्क्वपतत्वियं खे।।

भास्कराचार्य से भी बहुत पहले महर्षि पतंजलि ने महाभाष्य १।१।७ में प्रायः यही बात कहते हुए लिखा है कि वायुवेग से ऊपर की ओर फेंका गया मिट्टी का ढेला न तो टेढ़ा जाता है और न अधिक ऊपर की ओर ही जा पाता है। ढेला पृथ्वी का विकार होने से पुनः पृथ्वी पर ही आकर गिरता है।

लोष्ट= क्षिप्तो बाहुवेगं गत्वानैव तिर्यगागच्छति नोर्ध्वमारोहति पृथ्वी विकार= पृथ्वीमेव गच्छति।।

प्रिय रत्न आर्ष= स्व प्रणीत वैदिक ज्योतिषशास्त्र (१६४६ ई.) में उक्त आकर्षण सिद्धान्त को वेदाधारित घोषित करते हुए लिखते हैं कि ऋग्वेद ७।३४।७ में पृथ्वी को भार को धारण करने वाली कहा गया है।

बिभर्ति भारं पृथिवी न भूम।

अर्थात् पृथ्वी में प्रत्येक भार वाली वस्तु को धारण करने की शक्ति निहित है। पृथ्वी का ही विकार होने के कारण पृथ्वी से ऊपर की ओर जाने वाली प्रत्येक वस्तु पुनः पृथ्वी पर ही आकर आश्रय पाती है। यही प्रमाण है पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण शक्ति का, जिसका उल्लेख पतंजलि ने और भास्कराचार्य ने किया था।

अथर्ववेद १२।१।१२ पृथ्वी की इस आकर्षण शक्ति को 'ऊर्ज' संज्ञा देता है यथा

यत्ते मध्यं पृथिवी यच्च नभ्यं यास्त ऊर्जस्तन्वः संबभूवुः।
तासु नो धेह्यभि।

' हे पृथिवी! तुम्हारी जो मध्य की शक्ति है, जो नभ्य अर्थात् केन्द्र की शक्ति है और जो (तन्व=) बाहरी परत का 'ऊर्ज=' या बल है- उनमें हमको धारण कर।'

पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण शक्ति पृथ्वी की नाभि या केन्द्र से प्रस्फुटित होकर सभी ओर जाती है। आकर्षण का बिन्दु पृथ्वी का केन्द्र है। केन्द्र से पार्थिव अग्नि का प्रसार होता है, अतः पृथ्वी के केन्द्र में स्थित अग्नि ही मध्यवर्ती परतों और बाह्य परतों तक आती है और वही आकर्षण करने वाली है।

पृथ्वी की नाभि या केन्द्र में उत्पन्न होने वाली इस अग्नि को ऋग्वेद १०।१।६ में अनेक वर्णों या रंगों की ज्वालाओं को धारण करने वाली कहा गया है।

स तु वस्त्राण्यध पेशनानि वसानो अग्निर्नाभा पृथिव्याः।
अरुषो जातः।

इस अग्नि से उत्पन्न होकर प्रसारित होने वाली आकर्षण शक्ति को ही अथर्ववेद में 'ऊर्ज' संज्ञा दी गई है। इस आकर्षण शक्ति का ज्ञान हमें प्रज्वलित अवस्था में आकाश से गिरने वाले पार्थिव पिण्डों के शीतल होकर पृथ्वी पर पड़ने और पूर्ण बाहुवेग से ऊपर की ओर आकाश में फेंके गए पत्थर के पुनः पृथ्वी पर आकर गिरने से होता है। पतंजलि अथवा भास्कर द्वारा व्यक्त इस पृथ्वी की आकर्षण शक्ति का सिद्धान्त वेदों से ही ग्रहण किया जाकर उन तक पहुँचा था। महर्षि दयानन्द ने भास्कराचार्य के सूर्य सिद्धान्त और सिद्धान्त शिरोमणि ग्रन्थों को वेद विहित होने से ही आर्ष ग्रन्थ माना था। आधुनिक वैज्ञानिक जगत् में इस सिद्धान्त के कारण ख्याति प्राप्त न्यूटन ने भी सम्भवतः उस समय तक यूरोप में पहुँच चुके किसी ज्योतिष या खगोल विद्या विषयक ग्रन्थ से ही यह ज्ञान प्राप्त कर जगत् के सामने रखा हो। उसकी अपनी खोज थी या किसी भारतीय ग्रन्थ से ग्रहण किया गया ज्ञान, जो भी हो वह भी हमारे लिए आदरणीय हैं।

❑❑❑

१०१ भट्टयानी चौहट्टा, उदयपुर

१ – जब आपकी आँखे अपनी साईज से कई करोड़ों गुणा देखने का कार्य कर सकती हैं तो आप अपने दोनों हाथों से अपनी किस्मत क्यों नहीं बदल सकते ।

२ – हमें कम्प्यूटर का डिलीट (Delete) वाला कमाण्ड नहीं बनना हमें तो कम्प्यूटर का अनडू (Undo) वाला कमाण्ड बनना है क्योंकि प्रत्येक मनुष्य को कम से कम एक बार मौका अवश्य मिलना चाहिए ।

३ – जिस तरह सम्पूर्ण गणित ०, १, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, इन दस अक्षरों पर निर्भर है उसी तरह परमात्मा ने हमें भी १० इन्द्रियों का मालिक बनाया है जिसमें ५ कर्म इन्द्रियाँ और ५ ज्ञान इन्द्रियाँ हैं।

४ – हमें बरगद के उस पेड़ की तरह बनना है जो कि आँधी, तूफान, धूप, बारिश आदि परिस्थितियों में भी अपनी उसी नम्रता, धैर्य और अटल साहस से स्थिर रहकर सभी को छाया देता रहता है।

५ – हमें दीपक की लौ की तरह बनने का प्रयास करना चाहिए जो कि स्वयं जलकर भी औरों को प्रकाश प्रदान करती है ।

६ – जीवन में बैलेंस आवश्यक है वरना न तो आप सुख महसूस कर सकते हैं और ना ही दुःख महसूस कर सकते हैं।

७ – हमें अपनी आँखों की कमजोरी की वजह से सामने वाले को देखने में कठिनाई हो तो हम चश्मा लगाकर साफ देख सकते हैं लेकिन उसके मन को साफ होना चाहिए क्योंकि मन को देखने का चश्मा आज तक बना ही नहीं।

८ – व्यक्ति जब परेशान होता है तो ऊपर आसमान की तरफ देखता है कि हे भगवान ! ये तूने क्या कर दिया लेकिन वह नीचे ही अपने कामों को देख ले तो ऊपर देखने की आवश्यकता ही नहीं पड़े।

संकलन कर्त्ता- ओमप्रकाश वर्मा, प्रधान आर्यसमाज किशन पोल बाजार, जयपुर

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2015 सिडनी-आस्ट्रेलिया सानन्द सम्पन्न

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन २०१५ सिडनी-आस्ट्रेलिया का आज रविवार २९ नवम्बर, २०१५ को समापन हो गया। यह महासम्मेलन सफल रहा। सम्मेलन आर्य प्रतिनिधि सभा आस्ट्रेलिया के अन्तर्गत गठित संचालन समिति द्वारा आयोजित किया गया था। आर्यसमाज केन्द्र, ६९ शाने पार्क रोड, शाने पार्क के निकट स्थान पर आयोजित किया गया। महासम्मेलन में ५०० प्रतिनिधियों ने भाग लिया। सिडनी का यह आर्यसमाज केन्द्र ५ एकड़ भूभाग में फैला हुआ है जहाँ एक विस्तृत भवन में दो व्याख्यान कक्ष तथा एक बड़े मण्डप सहित सभी आवश्यक सुविधायें उपलब्ध हैं। सम्मेलन में भारत, मॉरीशस, सिंगापुर, अमेरिका, सुरीनाम, फिजी, न्यूजीलैण्ड, इंग्लैण्ड, नेपाल एवं आस्ट्रेलिया के सभी प्रान्तों से प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

आयोजन में विभिन्न कार्यक्रम सम्पन्न हुए। कार्यक्रम योग प्रशिक्षण से आरम्भ होता था जिसके बाद यज्ञ होता था। यज्ञ के बाद विभिन्न वैदिक विषयों पर उपदेश होते थे। इनमें से कुछ विषय थे- दिव्य व महान् होने के कुछ उपाय व इनका महत्व, वेदों में स्त्रियों की स्थिति, वैदिक दैनन्दिन जीवन, युवा सम्मेलन, भजन, ईश्वर विषयक वैदिक सिद्धान्त, तर्कसंगत वैदिक दृष्टिकोण, पुनर्जन्म एवं कर्मफल सिद्धान्त, समाज में अपराध समाप्त करने व शान्ति में वृद्धि करने के वैदिक समाधान, वैदिक मूल्य जिनसे परिवार आदर्श बनता है, वैदिक धर्म-वैश्विक मानवीय दृष्टिकोण, वैदिक संन्ध्या, स्वस्थ जीवन और वेद, अग्निहोत्र एवं मन्त्रोच्चार के वैज्ञानिक पक्ष व इससे लाभ, वेदों में विज्ञान, विभिन्न विषयों पर उपदेशों का विशेषज्ञों द्वारा समीक्षा, दक्षिण प्रशान्त महासागरीय देशों में आर्यसमाज का भविष्य आदि।

महासम्मेलन में भाग लेने वाले प्रमुख लोगों में सर्वश्री डा. सतीश प्रकाश, प. गुरुदत्त, प्रियंका शर्मा, सुरेशचन्द्र अग्रवाल, प्रकाश आर्य, विनय आर्य, योगेश कुमार आचार्य, सनत कुमार, आचार्य आशीष, वाचोनिधि आर्य, अशोक आर्य आदि थे। बड़ी संख्या में समाज के स्वयंसेवकों ने अतिथियों का प्रशंसनीय रीति से स्वागत-सत्कार किया, जिसमें स्वादिष्ट अल्पाहार, सुबह की चाय, दिन का भोजन, सायं की चाय तथा रात्रि भोज आदि सम्मिलित रहे। अतिथियों को नाना प्रकार का स्वादिष्ट भोजन कराया गया। इस आयोजन में व्यवस्था व अतिथि सत्कार का एक नया उत्कृष्ट मानदण्ड स्थापित किया गया। सभी पंजीकृत प्रतिनिधियों को महासम्मेलन में भाग लेने सम्बन्धी प्रमाण पत्र भी प्रदान किया गया।

– मेजर विजय आर्य

वैज्ञानिक धर्म और धर्म विज्ञान की ओर

गतांक से आगे ....

आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक

साम्प्रदायिक हिंसा, वर्गसंघर्ष, देशसंघर्ष आदि समाप्त होकर सारा विश्व परमपिता परमात्मा का एक परिवार बनने की दिशा में अग्रसर हो इसके लिए हमारे आधुनिक वैज्ञानिकों को भी यह सोचना होगा कि विज्ञान को तकनीक से कहाँ तक जोड़ना उचित व आवश्यक है, जिससे मानव व्यर्थ की स्पर्धा में फँसकर सर्वविध असंतोष में जलता हुआ चिन्ता, अवसाद, ईर्ष्या-द्वेष से ग्रसित होकर दुःखों से पीड़ित न होता रहे। पर्यावरण नष्ट भ्रष्ट होकर जीवों की प्रजातियाँ तक लुप्त न होती रहें। नये-नये रोग तथा जलवायु का संकट न बढ़ता रहे और इन सबके कारण संसार में भयंकर असंतोष, संघर्ष, कृत्रिम अभाव, आतंकवाद का जन्म न होता रहे। **इस हेतु विज्ञान को भी सत्य धर्म से जुड़ना होगा। ऐसा करने से विज्ञान उपर्युक्त समस्याओं का जनक नहीं बनकर धर्म के साथ मिलकर मानवीय मूल्यों का संरक्षक बनेगा।** पर्यावरण शुद्ध व सुरक्षित रहेगा। इसके लिए वैज्ञानिकों, समाजशास्त्रियों, साम्यवादियों, अर्थचिन्तकों व राजनेताओं को अपना दृष्टिकोण बदलने का साहस करना होगा। **धर्म को नशा न मानकर सत्याचरण पर आधारित मानवीय मूल्यों का संरक्षक मानना होगा।** धर्म को विश्वास की कल्पित वस्तु मानने के स्थान पर वैज्ञानिक सत्य पर सिद्ध मानना होगा। **जिस दिन विज्ञान ऐसे सत्य धर्म को साथ लेकर अनुसंधान करेगा तब सारा विश्व भोगवाद की स्पर्धा को विकास नाम से सम्बोधित नहीं करके त्यागवाद में संतुष्ट रहकर आवश्यक, उपयोगी तथा निरापद आविष्कार ही करेगा।** इससे न तो प्राकृतिक संसाधनों की न्यूनता होगी और न ही कृत्रिम अभाव एवं सामाजिक असमानताजन्य, अशान्ति व असन्तोष पनपेगा।

इन पंक्तियों का लेखक व्यर्थ शोर मचाने वाले कथित प्रबुद्धों वा कथित सामाजिक कार्यकर्ताओं को तो नहीं परन्तु वर्तमान शीर्ष वैज्ञानिकों को हमारी ईश्वर व धर्म विषयक अवधारणा को वैज्ञानिक कसौटी पर परखने का खुला आमन्त्रण देता है, साथ ही वर्तमान विज्ञान की कुछ प्रसिद्ध धारणाओं को भी सत्य की कसौटी पर परखने हेतु वैज्ञानिकों के साथ संवाद की भी इच्छा रखता है। आयें, हम दोनों ही पक्ष परस्पर संवाद करके सत्य का पता लगाकर इस मानव जाति को बचाने व सुखद समाज बनाने का प्रयास करें। इस प्रकार के सुखद समाज को बनाने की भावना ऋषियों की सदैव से रही है। **ऋषि दयानन्दजी तो परमाणु से लेकर परमेश्वर तक का यथार्थ ज्ञान व उससे अपना व दूसरों का उपकार करना ही विद्वानों का कर्तव्य बताते हैं।**

पूर्वकालीन ऋषि, देवगणों में ब्रह्मा, मनु, भृगु, नारद, सनत्कुमार, मार्कण्डेय अगस्त्य, भरद्वाज, अत्रि, यास्क, गौतम, कणाद, कपिल, व्यास, पतंजलि, याज्ञवल्क्य, बृहस्पति, महादेव-शिव, विष्णु, राम, कृष्ण आदि हजारों महापुरुषों तथा मध्यकालीनों में आर्यभट्ट, भास्कराचार्य, ब्रह्मगुप्त आदि की दृष्टि में सत्य धर्म तथा सच्चे विज्ञान का ऐसा ही आदर्श था जिस कारण तत्कालीन संसार में सुख-शान्ति का साम्राज्य था।

उधर महान् विदेशी वैज्ञानिकों में सर अल्बर्ट आइंस्टाइन, सर आलीवर जोसेफ लॉज, प्रो.जॉन एमबोज फ्लेमिंग, प्रो. एडवर्ड हल, जान एलन हार्कर, प्रो. सिलवेनिस फिलिप्स आदि अनेक वैज्ञानिक विज्ञान व अध्यात्म के प्रबल समर्थक थे। मैं जब-जब सर आईंस्टाइन के बारे में सुनता व जानता हूँ तब-तब मेरा मस्तक उस महान् व्यक्ति के सम्मुख आदर से झुक जाता है।

मित्रो! आज हमारे सम्मुख चुनौतीपूर्ण प्रश्न यह है कि आज जब विज्ञान व अध्यात्म दोनों अति दूर खड़े दिखाई दे रहे हैं, तब कैसे इन्हें साथ-साथ लाया जाये? मेरे मस्तिष्क व आत्मा ने विचारा कि क्यों न अपना जीवन इसी महान् मानवीय कार्य के लिए समर्पित किया जाये? सत्य, वेद, धर्म के

संस्कार आर्य परिवार के वातावरण से मिले। मेरे आदर्श स्वरूप ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों से पोषण मिला। इस समय कुछ महान् वैज्ञानिकों व वैदिक विद्वानों का सद्‌भाव व सहयोग मिल रहा है। मैं आशा करता हूँ कि विश्व के अन्य प्रसिद्ध वैज्ञानिकों, दार्शनिकों, धर्माचार्यों व युवकों का भी ऐसा ही भाव मेरे प्रति बनेगा।

मेरे मित्र महानुभावो! **मैंने अब तक तो वेद धर्म को सत्य धर्म की शर्तों पर स्वबुद्धि के अनुसार यथार्थ पाया है।** इस कारण मैंने विचार किया है कि वैदिक वाङ्मय से विज्ञान के गूढ़ रहस्यों को खोजकर आधुनिक वैज्ञानिकों के समक्ष प्रस्तुत किया जाये, वे उस पर प्रयोगशालाओं में अनुसंधान करें तो उन्हें जहाँ समय की बचत होगी वहीं उन्हें अनुसंधान हेतु नये-नये क्षेत्र प्राप्त हो सकेंगे। इसके साथ ही वैदिक विज्ञान की प्रमाणिकता भी उनकी दृष्टि में बढ़ेगी। मैं यह अनुभव कर रहा हूँ कि वर्तमान विज्ञान कई बिन्दुओं पर अपने को असहाय अनुभव कर रहा है। यदि कोई वेद के प्रति मेरी दृष्टि को मेरा पक्षपात माने तो उसे चाहिए कि वह जिसे अपना धर्म ग्रन्थ मानता है, उस पर गम्भीर अनुसंधान करके संसार के सम्मुख उसका सम्पूर्ण विज्ञान प्रकाशित करे। **मैं संकल्पित हूँ कि असहाय विज्ञान को वैदिक वैज्ञानिक रहस्यों के द्वारा नई दिशा प्रदान करूँ। मैं वेद को वर्तमान विज्ञान के पीछे नहीं बल्कि वर्तमान विज्ञान को वेद के पीछे चलाने की भावना रखता हूँ** और मुझे विश्वास है कि मैं ऐसा कर पाऊँगा। इससे उसकी श्रद्धा वेद की अन्य विद्याओं (यथा अध्यात्म, सामाजिक, राजनैतिक सिद्धान्त, यज्ञ, योग, गो-विज्ञान, अर्थशास्त्र आदि) पर भी होगी। प्रबुद्धजनों को इस बात का भी अनुभव होगा कि **वेद वा वैदिक साहित्य किसी देश या वर्ग के लिए ही नहीं अपितु विज्ञानादि की भाँति समस्त सृष्टि के लिए हितकारी हैं।**

संसार को धीरे-धीरे इस बात का भी ज्ञान होगा कि वेद किसी देश वा वर्ग विशेष की सम्पदा नहीं बल्कि सभी मानवों की साझा सम्पत्ति है। वेद उस काल का है, जब हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, जैन, बौद्ध, पारसी, ताओ, यहूदी, साम्यवादी, नास्तिक आदि वर्ग बने भी नहीं थे। तब समस्त भूमण्डल पर सभी केवल मानव ही कहलाते थे। उस समय देशों का प्रादुर्भाव भी वर्तमान रूप में नहीं हुआ था। यह वेद ही समस्त ज्ञान-विज्ञान का मूल है, ऐसा जिस दिन सिद्ध हो जायेगा तो मुझे कोई कारण प्रतीत नहीं होता कि कोई प्रबुद्ध मानव इसे स्वीकार न करे। इससे बहुत आगे चल कर मैं **वैदिक ऋचाओं को सृष्टि प्रक्रिया में उत्पन्न सूक्ष्म कम्पन**

(ऊर्जा) के रूप में सिद्ध कर सकूँगा।

मेरे बन्धुवर! जिस बात को मैं यहाँ कह रहा हूँ उसे सिद्ध करना ही मेरे जीवन का लक्ष्य है। मेरा जीवन विश्व भर के प्राणिमात्र के समग्र हित चिन्तन के लिए है, न कि किसी मत पंथ का प्रचार करना मेरा प्रयोजन है। इसके लिए मैं धर्म व विज्ञान दोनों को परस्पर मिलाने के प्रयत्न का दृढ़व्रती हूँ। **विज्ञान से तात्पर्य सर्वत्र तकनीकी ज्ञान भी मैं ग्रहण नहीं करता।** मैं समझता हूँ कि बेरोक व अनावश्यक तकनीक मानव को आलसी, भोगवादी, गलाकाट-प्रतिस्पर्धी, अशांत व संघर्षप्रिय बनाती है। मेरा ध्येय सृष्टि के गम्भीर व सूक्ष्म रहस्यों को जानकर महती चेतना परमात्मा की ओर वर्तमान विज्ञान को उन्मुख करना है। इससे मानव में आस्तिकता, दयाभाव, प्रेम, न्याय, सत्य आदि गुणों का उदय होगा। वह निरंकुश व स्वेच्छाचारी नहीं बनकर परमात्मा के आधीन चलेगा। इसी क्रम में परमाणु-नाभिकीय-कण-ब्रह्माण्ड-भौतिकी के गूढ़ तत्वों को वैदिक वाङ्मय से खोजना साथ-साथ आधुनिक विज्ञान की अवधारणाओं को समझना मेरी रुचि के विषय हैं। मेरी दृष्टि में उपर्युक्त विषय विज्ञान के सूक्ष्मतम विषय हैं, अन्य सभी विज्ञान इनसे किसी न किसी प्रकार जुड़े हुए हैं। मेरा दृढ़ मत है कि उपर्युक्त विषयों में आधुनिक विज्ञान, वैदिक विज्ञान से अनेकत्र नयी दिशा प्राप्त कर सकता है। बल, ऊर्जा व द्रव्यमान के रहस्यों को समझना भी इसी क्षेत्र का विषय होगा। इसके आगे अनेक उपयोगी तकनीकी विषय भी अनायास ही प्राप्त हो सकेंगे, ऐसी मैं सम्भावना करता हूँ।

आधुनिक विज्ञान उपर्युक्त विषयों में क्या-क्या भूल कर रहा है तथा वर्तमान व मध्यकालीन वैदिकों ने क्या-क्या भूलें वैदिक ज्ञान को समझने में की हैं, या कर रहे हैं, इसका भी पूर्ण अनुमान मेरे मस्तिष्क में हो रहा है, ऐसा विश्वास है। मुझे इस दिशा में कार्य करते लगभग दस वर्ष ही व्यतीत हुये हैं। मैंने भारत के कई विश्व स्तरीय भौतिक वैज्ञानिकों की पर्याप्त संगति की है। विश्वभर में सृष्टि विज्ञान के क्षेत्र में हो रही प्रगति से भी निरन्तर अवगत होता रहता हूँ।

उच्चस्तरीय वैज्ञानिक साहित्य भी पढ़ा है। सार यह है कि वर्तमान विज्ञान अनेकत्र उलझनों में फँसा है, अनेकत्र असहाय प्रतीत होता है। उस असहाय व उलझे वर्तमान विज्ञान को सहायता देना मेरा उद्देश्य है। उधर वैदिक वाङ्मय के अध्येता भी ऐसे भटक रहे हैं, मानो अन्धा अन्धे को मार्ग बता रहा हो। वस्तुतः इनके मिथ्या ज्ञान व अन्ध परम्परा के कारण ही आज वेद व ऋषि-मुनियों के महान् ज्ञान-विज्ञान का विनाश हो गया है। इन्हीं के कारण वेद व भारतीय वैदिक वाङ्मय साम्प्रदायिकता के कलंक से कलंकित है। मिथ्या कर्मकाण्ड, पाखण्ड, आडम्बर ने वैदिक विज्ञान को मानो विनष्ट कर दिया है। महर्षि दयानन्द का अनुगामी आर्य समाज भी अपने मार्ग से भटक कर एक सम्प्रदाय के रूप में दिखाई दे रहा है, जहाँ विद्या के स्थान पर यश, पद, प्रतिष्ठा की चाह रह गयी है। वेद का मार्ग भ्रान्त हो चुका है। अन्य मत-पन्थों की भाँति इसे भी आज पाखण्ड का व्यापारमात्र माना जा रहा है।

वैदिक वाङ्मय के अन्तर्गत मैं इस समय ऋग्वेद के ब्राह्मण (ऐतरेय ब्राह्मण) पर अपना वैज्ञानिक व्याख्यान लिख रहा हूँ। अब तक तीन चौथाई भाग से कुछ अधिक समाप्त हो गया है। इस रहस्यपूर्ण ग्रन्थ में अब तक प्रायः सभी

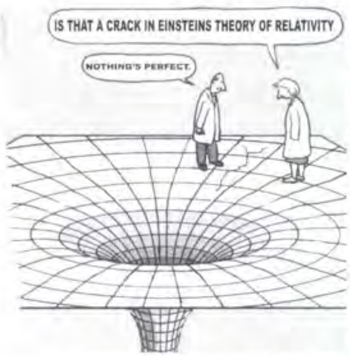

भाष्यकारों ने इस ब्राह्मण ग्रन्थ में पशुबलि, यज्ञादि कर्मकाण्ड आदि को ही पाया है परन्तु सम्पूर्ण संसार में सम्भवतः पिछले कुछ हजार वर्ष में मैंने ही इस ग्रन्थ की महती वैज्ञानिकता को समझने का प्रयास किया है। अब तक किये व्याख्यान से मैं अनुभव करता हूँ कि आधुनिक विकसित भौतिक विज्ञान को इस ग्रन्थ के द्वारा एक क्रान्तिकारी दिशा दी जा सकती है। जिन बिन्दुओं वा प्रश्नों का हल अब तक अध्ययन से मिलेगा, वे बिन्दु संक्षेप में निम्नानुसार हैं:-

(१) बल की अवधारणा जो आज अत्यन्त अस्पष्ट व अपूर्ण है। जिस पर प्रख्यात अमरीकी वैज्ञानिक रिचर्ड पी.फाइनमैन के डायग्राम्स को विश्वभर में अत्यन्त प्रामाणिक माना जाता है। मैं इस विषय पर फाइनमैन से बहुत आगे जाकर लेख लिख सकूँगा।

(२) मैं unified force theory को समझा सकूँगा।

(३) बल व ऊर्जा के स्वरूप व उनकी उत्पत्ति के रहस्य को सुलझा सकूँगा।

(४) जिन्हें संसार आज मूल कण मानता है, उनके मूलकण न होने तथा इनके निर्माण की पूर्ण प्रक्रिया को बहुत विस्तार से स्पष्ट कर सकूँगा। वर्तमान विज्ञान इस विषय में विचार भी नहीं कर पा रहा है अथवा कर रहा है।

(५) विभिन्न मूल कणों व क्वाण्टाज् की संरचना, स्वरूप व व्यवहार के अज्ञात रहस्यों को उद्घाटित कर सकूँगा।

(६) मैं कणों व क्वाण्टाज् की द्वैत प्रकृति की वैदिक व्याख्या कर सकूँगा।

(७) ब्लैक होल के स्थान पर विश्वविख्यात भारतीय खगोल शास्त्री डॉ. मित्रा साहब के ई.सी.ओ मॉडल से मेरा ऐतरेय विज्ञान भी सहमत है। मैं इस विषय में विचार लिख सकूँगा।

(८) सृष्टि निर्माण की प्रक्रिया को वर्तमान किसी सिद्धान्त से आगे ले जाकर विस्तार से अनादि मूल पदार्थ से लेकर तारों के निर्माण तक के विषय में भी विस्तार से लिख सकूँगा।

(९) डार्क इनर्जी जिसे बिग बैंग के लिए उत्तरदायी माना जाता है, के दूसरे स्वरूप जिसमें बिग बैंग नहीं बल्कि अनेक विस्फोट सदैव होते रहते हैं, सृष्टि की हर क्रिया में उसकी भूमिका को दर्शा सकूँगा। मेरी डार्क एनर्जी वर्तमान विज्ञान द्वारा कल्पित डार्क इनर्जी से भिन्न होगी।

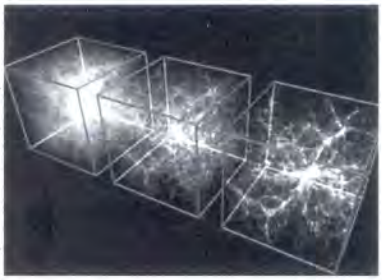

(९) विभिन्न गैलेक्सियों सौर मण्डलों में तारों व ग्रहादि लोकों के परिक्रमण का प्रारम्भ व इनके गुप्त विज्ञान को विस्तार से प्रकाशित कर सकूँगा।

(१०) वर्तमान विज्ञान में कल्पित वैक्यूम इनर्जी के रूप में एक अन्य लगभग सर्वव्यापक ऊर्जा के स्वरूप को बतला सकूँगा।

(११) सृष्टि विज्ञान, खगोल विज्ञान एवं कण भौतिकी के अनेक रहस्यमय बिन्दुओं पर प्रकाश डाल सकूँगा।

(१२) स्पेस, गुरुत्व, काल के रहस्यमय स्वरूप वा उत्पत्ति प्रक्रिया को स्पष्ट कर सकूँगा।

(१३) **इन सब कार्यों के लिए ईश्वर नामक चेतन, सर्वव्यापक व सर्वज्ञ, निराकर व सर्वशक्तिमयी सत्ता की अनिवार्यता को भी सिद्ध कर सकूँगा।**

(१४) ईश्वर के स्वरूप, उसकी कार्यशैली के वैज्ञानिक स्वरूप को स्पष्ट कर सकूँगा।

(१५) **वेद मंत्र इस ब्रह्माण्ड में सर्वत्र व्याप्त विशेष प्रकार की**

तरंगों के रूप में ईश्वरीय रचना हैं, ये मंत्र किसी भी अन्य ग्रन्थ के समान नहीं हैं। इसे भी सिद्ध कर सकूँगा।

(१६) मैं वैदिक मंत्रों रूपी vibrations के अद्‌भुत् स्वरूप के द्वारा समस्त सृष्टि के उत्पन्न होने में महान् व गुप्त विज्ञान को प्रकाशित करके **वेद तथा वैदिक संस्कृत भाषा की सार्वत्रिकता व शाश्वतता सिद्ध करके** ब्रह्माण्ड विज्ञान के कई अनसुलझे रहस्यों को खोल सकूँगा, इससे वेद व ऋषि मुनियों पर साम्प्रदायिकता का मिथ्या कलंक सदा के लिए मिट जाएगा।

(१७) मैं सत्यधर्म व कल्याणकारी भौतिक विज्ञान का पारस्परिक अभेद सिद्ध करके संसार को इनकी ओर ही बढ़ने का आह्वान कर सकूँगा।

(१८) मैं भारतीय संस्कृति, सभ्यता के प्रति घृणा वा उपेक्षा का भाव रखने तथा विभिन्न विदेशी सभ्यताओं के दास बनकर अभिव्यक्ति वा निजी जीवन की स्वतंत्रता के नाम पर उच्छृंखल बनी युवा पीढ़ी, मीडिया वा कथित प्रबुद्ध वर्ग की दूषित वा रुग्ण मानसिकता की चिकित्सा करके **भारतीय संस्कृति सभ्यता की महती वैज्ञानिकता समझा कर प्राचीन भारतीय गौरव की रक्षा कर सकूँगा।**

मुझे आशा है कि मेरा ऐतरेय ग्रन्थ का वैज्ञानिक व्याख्यान ही मेरे व्रत को पूर्ण करने का समर्थ साधन बनेगा और सृष्टि के रहस्यों को खोजने के इच्छुक विश्व के महान् वैज्ञानिक आगामी कुछ दशक तक मेरे व्याख्यान पर शोध करते रह सकेंगे। परन्तु इस कार्य के लिये ईश्वरीय कृपा, उत्तम स्वास्थ्य, आप सबका सर्वात्मना सहयोग तथा ईमानदार महान् वैज्ञानिकों की आत्मीयता भी अति आवश्यक है।

इसके सहारे मेरा लक्ष्य पूर्ण होगा ही, यह आशा करता हूँ। अति उच्च स्तरीय भौतिक वैज्ञानिकों से मेरी अपेक्षा यह है कि वे मुझे वर्तमान विकसित भौतिक विज्ञान में आ रही ऐसी समस्याओं, जिनका समाधान उन्हें नहीं सूझ रहा, की जानकारी निःसंकोच देने की कृपा करते रहें। **मुझे आशा है कि उन समस्याओं का समाधान ऐतरेय ब्राह्मण व वेद आदि पर चिन्तन करके कुछ समय पश्चात् मैं दे सकूँगा।** मैं उच्च स्तरीय प्रयोगशालाओं को देखने की भी महती इच्छा रखता हूँ, साथ ही वैज्ञानिकों से वर्तमान भौतिकी के मूलभूत सिद्धान्तों को समझने की भी उत्कृष्ट इच्छा रखता हूँ। इससे भी मेरे काम को गति मिल सकेगी। **हम और आधुनिक भौतिक वैज्ञानिक परस्पर विरोधी, प्रतिस्पर्धी नहीं बल्कि पूरक व मित्र बनकर धर्म को वैज्ञानिक आधार तथा विज्ञान को कल्याण व शान्ति का साधन बना सकते हैं।** ऐतरेय ब्राह्मण पर मेरे व्याख्यान के पूर्ण होने तक (लगभग दो वर्ष) मैं उसके विज्ञान पर कुछ भी कहना नहीं चाहूँगा क्योंकि मैं जिस प्रक्रिया पर चल रहा हूँ उस पर चलने वाला विश्वभर में सम्भवतः मैं अकेला ही हूँ। मेरा न तो कोई मार्गदर्शक है और न सुस्पष्ट कोई साहित्य वा परम्परा विश्वभर में दिखाई देती है। इस कारण मुझे शान्ति से पढ़ने व मनन करने दिया जाये। मेरा भाष्य पूर्ण होने पर प्रतिदिन वैज्ञानिकों के साथ सर्वत्र चर्चा करना ही एक मात्र कार्य रह जायेगा और अनेक नवीन क्षेत्रों में प्रयोगों का मार्ग खुल जायेगा। मैं अपना कार्य पूर्णतः निष्कामभाव से सर्वसंसार के हितार्थ कर रहा हूँ। मेरे जीवित रहने का केवल यही एकमात्र उद्देश्य रह गया है, अन्य कोई इच्छा इस संसार में शेष नहीं है।

प्यारे भाइयो! मेरे हृदय में तीव्र इच्छा सदैव यह भी रहती है कि संसार का प्रत्येक मानव सत्य का प्रबल पक्षधर व अन्वेषक बने। यदि ऐसा न कर सके तो सत्य अन्वेषण में स्वसामर्थ्यानुसार सहयोग तो करे ही। यदि सहयोगी भी नहीं बन सके तो कम से कम किसी पूर्वाग्रह, दुराग्रह, पद-प्रतिष्ठा, धन की लालसा में अथवा अनेकता में एकता की भ्रान्त धारणा, कल्पित भ्रान्त मानवता, मिथ्याधारित राष्ट्रियता, मिथ्या सैक्यूलरिज्म के वशीभूत होकर सत्य का विरोधी तो नहीं बने। प्रत्येक मानव को यह बात हृदय की गहराइयों तथा मस्तिष्क के चिन्तन की ऊँचाइयों से विचारनी चाहिए कि **सत्य धर्म तथा विज्ञान दोनों की ही कोई भौगोलिक सीमा नहीं होती है। तब नस्ल, भाषा, वर्ग, सम्प्रदाय का भेद तो नितान्त भ्रामक कल्पना है।** यद्यपि मैं यह स्वीकारता हूँ कि कुछ बातें देश काल परिस्थिति के अनुसार बदल भी जाती हैं, परन्तु इसी तर्क पर भिन्न-भिन्न परस्पर विरुद्ध विचारों को सत्य मान लेना, सत्य के साथ घोर अन्याय है। **ईश्वर के नियम सार्वदेशिक, शाश्वत तथा सर्वहितकारी होते हैं।** ईश्वर एक है, उसकी व्यवस्थायें भी एक ही हैं, चाहे वे भौतिक क्षेत्र में हों अथवा आध्यात्मिक क्षेत्र में। उन्हें ही सत्य धर्म तथा वास्तविक विज्ञान कहा जा सकता है और उसी सत्यमार्ग पर मानव मात्र को प्रवृत्त करना मेरा ध्येय है। मैं संसार भर के विद्वानों, वैज्ञानिकों, दार्शनिकों व धर्मानुरागियों के स्नेह व सहयोग का अभिलाषी हूँ।

इसके साथ ही मैं विश्वभर के प्रबुद्धजनों, प्यारे छात्र-छात्राओं, पत्रकारों, शिक्षाविदों, समाज-शास्त्रियों, अर्थ-शास्त्रियों, राजनेताओं, उद्योगपतियों, व्यापरियों, कृषकों, श्रमिकों, नास्तिकों, साम्यवादियों या अन्य किसी भी क्षेत्र के प्रतिभाशाली युवाओं का आह्वान करता हूँ कि **मेरे**

विचारों व उद्देश्य पर एक बार शान्त व निष्पक्ष हृदय एवं प्रखर तार्किक मस्तिष्क से गम्भीरता से विचार करें। यदि उनके निष्पक्ष आत्मा को यह मार्ग सत्य व हितकारी प्रतीत होवे तो अपने-अपने ढंग से यथेष्ट प्रचार वा सहयोग करें व करावें।

आइये! मेरे विश्व भर के मित्रजनो। हम सब मिलकर इस पृथिवी को परमात्मा का एक परिवार मानकर वेद के शब्दों में कहें-

संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
समानो मंत्रः समितिः समानी समानं मनः सहचित्तमेषाम् ।

(ऋग्वेद १०.१९१.१-२)

अर्थात् हम सब मानव प्राणिमात्र के कल्याणार्थ साथ-साथ चलें, समान विचार वाले बनें, हमारी मन्त्रणायें, सभायें, मन, चित्त, हृदय सभी समान भाव रखने वाले हों। कोई भी परस्पर विरोधी न रहे, जिससे संसार में सर्वत्र शान्ति, आनन्द, भातृभाव का सुखद साम्राज्य होवे।

इन्ही कामनाओं व भावनाओं एवं आपके सर्वात्मना सहयोग की आशा के साथ... सत्य धर्म व विज्ञान के पथ का पथिक।

- अध्यक्ष, श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास, वेद विज्ञान मंदिर
भागल-भीम, वाया- भीनमाल, जिला- जालोर
सम्पर्क- ०२९६९-२९२१०३, चलभाष- ०९४१४१८२९७३

नवलखा महल में नवनिर्मित "आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा" एवं सत्यार्थ प्रकाश स्तम्भ के बारे में दर्शकों के विचार

अतुलनीय, प्रेरक, समभाव वास्तव में बहुत ही सुन्दर एवं यहाँ का वातावरण शिक्षा एवं पवित्र सुख प्रदान करने वाला है। मैं यहाँ आकर खुश हूँ।

- प्रदीप कुमार

✤✤✤✤✤✤✤✤✤✤✤✤✤✤✤✤✤✤✤✤✤✤✤✤✤✤✤✤✤✤

प्रयास सराहनीय एवं स्तुत्य। विषय विविधता से मूल उद्देश्य जुड़ा हुआ है। महर्षि का सन्देश जन-जन तक पहुँचाने में इससे सफलता प्राप्त होगी। ईश्वर इस शुभ संकल्प को पूरा करने की सामर्थ्य एवं साधनों को सिद्ध करे ऐसी कामना है।

- सुरेश चन्द्र चौहान, उदयपुर

✤✤✤✤✤✤✤✤✤✤✤✤✤✤✤✤✤✤✤✤✤✤✤✤✤✤✤✤✤✤

मैं स्वामी दयानन्द जी के जीवन से बहुत प्रभावित हूँ। मुझे यहाँ आकर एवं ऐसी भव्य चित्र प्रदर्शनी को देखकर बहुत ही ज्ञान प्राप्त हुआ। स्वामी जी एवं अन्य देश भक्तों, विद्वानों, क्रान्किारियों और भारतीय संस्कृति से जुड़ी बातें व चित्र हमें पहली बार एक ही संग्रहालय में देखने को मिला। मन प्रसन्न हुआ एवं ज्ञान में वृद्धि हुई।

- प्रणवीर सिंह सिसोदिया, उदयपुर

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमानू आनन्द कुमार आर्य, श्री आर.डी. गुप्त, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष,श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभाआर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री दीपचंद आर्य, श्री एम.पी. सिंह, प्रो. आर.के.एरन, श्री खुशहालचन्द आर्य, श्री विजय तायलिया, श्री वीरेन्द्र मित्तल, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री भारतभूषण गुप्ता, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री विकास गुप्ता, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक, श्री नरेश कुमार राणा, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री रघुनाथ मित्तल, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव श्री लोकेश चन्द्र टांक, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरमुखी, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई

प्रेरणा

मोर्चा "अंधविश्वास" के खिलाफ

बिरुबाला- एक साठ-सत्तर साल की महिला। भारत के एक सबसे पिछड़े माने जाने वाले गाँव में रहनेवाली। बस नाम मात्र पढ़ी लिखी। आर्थिक तौर पर बेहद गरीब। और समाज की सताई हुई। पर समाज से अंधविश्वास मिटाने के लिए इस महिला ने जो करके दिखाया है उसकी आप कल्पना भी नहीं सकते। इन्द्राणी रायमेधी की लिखी और सेज (हम) द्वारा प्रकाशित किताब 'माय हाफ द स्काई' से लिए कुछ अंश से जानें भारत की इस वीरांगना की कहानी।

'बिरुबाला ने सुनीला को अपनी छाती से लगाया और चिल्लाने लगी, 'शर्म आनी चाहिए आप लोगों को। क्या अब आप लोगों को ये डायन जैसी लगती है? क्या डायन का इस तरह खून बहता है? क्या डायनें बेहोश होती हैं? अरे जाहिलो,

सुनीला तुम में से ही एक है। उसे भी तुम्हारी तरह भूख लगती है। वह भी तुम्हारी ही तरह ठंडी, गर्मी, सुख, दुःख सब महसूस कर सकती है। उसके कपड़े देखो जो तुम्हारे कपड़ों जैसे ही मैले कुचैले हैं, उसका घर देखो, जिसे तुमने जलाकर ख़ाक में मिला दिया, वो घर भी तुम्हारे घर की तरह एक छोटी सी कुटिया ही थी। अगर उसमें डायन की शक्तियाँ होतीं तो क्या वह उन्हें एक बेहतर ज़िन्दगी जीने के लिए इस्तेमाल नहीं करती? क्या वो इन शक्तियों के बल पर कहीं और मज़े करने नहीं चली जाती? क्या ज़रूरत थी उसे यहाँ गरीबी और भुखमरी में दिन गुज़ारने की? किसने बताया तुम लोगों को कि ये डायन है? उस ओझा ने? और तुम सबने उसकी बातें मान लीं? अगर ऐसा ही है तो तुम लोगों में और भेड़-बकरियों में कोई फर्क नहीं है।'

धीरे-धीरे भीड़ कम हो गयी। एक औरत एक फटे हुए कपड़े को पानी में भिगोकर सुनीला के ज़ख्म धोने लगी। सुनीला का पति और बच्चे उसके पास आकर फूट-फूट कर रोने लगे। बिरुबाला ने अपनी शाल सुनीला को ओढ़ाई और एक लम्बा रास्ता तय करके अपने गाँव की ओर चल दी।

बिरुबाला असम और मेघालय की सीमा पर बसे गोलपारा जिले के छोटे से गाँव ठाकुरविला में रहने वाले एक अत्यंत गरीब किसान की पत्नी है। बिरुबाला के शुरुआती जीवन को देखकर कोई ये नहीं कह सकता था की एक दिन वह अन्याय के खिलाफ लड़ने वाली एक निर्भीक कार्यकर्ता बनेगी।

बिरुबाला सिर्फ ५ साल की थी जब उसके माता-पिता का देहान्त हो गया। पर इतनी छोटी सी उम्र में अनाथ हुई बिरुबाला ने कभी हिम्मत नहीं हारी। मुश्किल हालातों से गुज़रते हुए वे सिर्फ छटी कक्षा तक ही पढ़ पायी। पर शिक्षा की इस कमी को उन्होंने अपनी बाकी कलाओं के साथ पूर्ण किया। बिरुबाला पाक-कला, सिलाई, कढ़ाई, बुनाई जैसी कई गुणों की धनी हैं।

सोलह साल की होते-होते बिरुबाला का विवाह चंद्रेश्वर राभा के साथ हो गया। और जल्द ही वे तीन बेटों और एक बेटी की माँ भी बन गयीं। बड़ा बेटा धर्मेश्वर, मझला विष्णु प्रभात, छोटा दोयालू और बेटी कुमोली।

हालाँकि गरीबी ने ज़िन्दगी को मुश्किल बना दिया था पर फिर भी ये सभी अपने परिवार में खुश थे। पर एक दिन उनकी इन खुशियों पर तब ग्रहण सा लग गया जब उनका सबसे बड़ा बेटा धर्मेश्वर कुछ बदला-बदला सा रहने लगा। धर्मेश्वर अपने आप से ही बातें करता, कई-कई दिनों तक घर से गायब रहता, कुछ वहम सा भी हो जाता उसे मानो कोई दुश्मन उसके आस-पास हो, और तो और वो अपनी माँ पर भी हाथ उठाने लगा था। घबराकर एक दिन उसके पिता ने

एक ओझा से मदद माँगी। ओझा ने इन बातों की जो वजह बतायी वो धर्मेश्वर के अजीबोगरीब व्यवहार से भी ज्यादा अजीब थी।

'मुझे लगता है कि इस लड़के ने एक चुड़ैल के साथ विवाह कर लिया है। और अब वो चुड़ैल इसके बच्चे की माँ बनने वाली है। जैसे ही वो, इसके बच्चे को जन्म देगी, इसे इस धरती से जाना होगा। अब सिर्फ तीन दिन बचे हैं तुम्हारे बेटे के पास।' ओझा के ये शब्द सुनते ही बिरुबाला और उसका परिवार बहुत सहम गया और एक तरह से धर्मेश्वर की मौत से पहले ही उसका मातम मनाने लगा। कई दिन बीत गए पर धर्मेश्वर को कुछ नहीं हुआ। बिरुबाला को इस बात से राहत तो मिली पर ओझा के इस सफ़ेद झूठ पर उन्हें गुस्सा भी बहुत आया।

बिरुबाला को समाजसेवा का गुण अपनी माँ सागरबाला से विरासत में मिला था। इसी विरासत को आगे बढ़ाते हुए बिरुबाला ने 'ठकुरविला महिला समिति' की शुरुआत की। **इसी संगठन के ज़रिये ही उन्होंने सबसे पहले लोगों में काले-जादू और झाड-फूँक के खिलाफ जागरुकता फैलाने की शुरुआत की।** इसके बाद वे 'ग्रेटर बोर्झारा महिला समिति' की सचिव बन गयीं। साल २००० में वे 'असम महिला समता सोसाइटी' की भी सदस्य बनीं।

अचानक ऐसा क्या हो जाता है कि एक सीधा साधा गाँव वाला एक बुरी आत्मा या एक डायन बन जाता है?

'हर गाँव में एक ओझा होता है, एक हकीम और एक ज्योतिष भी होता है जो आपको आपका भविष्य बताता है और अगर ये इंसान एक बार भी ये कह दे कि कोई डायन है तो हर कोई उसपे विश्वास करने लगता है। गाँव वाले डायन या बुरी आत्मा को ढूँढ़ निकालने का एक और तरीका अपनाते हैं। यदि कोई बीमार हो और किसी भी दवा से ठीक नहीं हो रहा हो तो उसे सिर से लेकर पाँव तक एक जाले से ढक दिया जाता है। और फिर सभी लोग इकट्ठा होकर उसे छड़ी से मारते हैं। मरीज़ दर्द के मारे चीखता है, चिल्लाता है पर गाँव वाले उससे बुरी आत्मा का नाम पूछते रहते हैं और मारते रहते हैं। अपने आपको इस मार से बचाने के लिए ये मरीज़ किसी का भी नाम ले लेता है। और गाँव वाले उसे डायन या बुरी आत्मा समझने लगते हैं।'

इसके बाद जो होता है वो आपके रौंगटे खड़े कर देगा। जिस भी महिला का नाम मरीज़ डायन के तौर पर लेता है, उसे सभी गाँव वालों के सामने हाज़िर किया जाता है। और फिर इस महिला को पूरे गाँव में भगा-भगा कर मारा जाता है या जाले में कैद करके इसे नुकीले भाले चुभाये जाते हैं।

और अगर इन सब यातनाओं के बाद उसकी मृत्यु हो जाती है तो उसके शरीर के छोटे-छोटे टुकड़े करके अलग-अलग जगहों पर दफन किया जाता है ताकि वह दुबारा जन्म न ले सके। डायन समझे जानेवाले इस व्यक्ति की सारी संपत्ति भी हड़प ली जाती है। और इस मामले में उसके घरवाले भी कुछ बोलने की हिम्मत नहीं कर पाते, इस डर से कि कहीं उनके साथ भी वैसा ही कुछ न हो जाये। काला जादू या डायन घोषित करने की ये प्रथा सिर्फ पिछड़े हुए गाँवों में सामाजिक बुराई का ही प्रतीक नहीं है बल्कि ये सरासर मानवाधिकार की धज्जियाँ उड़ाने जैसा है।

एक लम्बे संघर्ष के बाद बिरुबाला की ज़िन्दगी ने कुछ अच्छे लम्हें भी देखे। १६६४ में नॉर्थ ईस्ट नेटवर्क ने उन्हें 'शांति पुरस्कार' (नोबल पीस प्राइज) से सम्मानित किया।

उसी साल उन्हें 'रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड' की ओर से 'रियल हीरोज़- आर्डिनरी पीपल, एक्स्ट्राऑर्डिनरी सर्विस' का खिताब भी दिया गया। स्विटजरलैंड के २००० महिला पीस प्रोजेक्ट, जिसने दुनियाभर की ISO देशों की २००० महिला पीस वर्कर्स (शांति दूतों) को समान्नित किया है, ने भी उनका नाम इनमें शामिल किया है।

पर इतने सारे सम्मान और पुरस्कार पाने के बावजूद भी बिरुबाला का जीवन उतना ही सादा और संघर्षों भरा है।

बिरुबाला इतनी स्वाभिमानी हैं कि वे अपनी आर्थिक तंगी के बारे में एक शब्द भी नहीं बोलतीं। अपनी गरीबी से निराश होने के बजाय वे एक बहुत ही नेक काम करने के सपने देखती हैं। **उनका सपना है कि वे डायन करार दिए गए पीड़ितों के लिए एक ऐसा आसरा बनाएँ जहाँ मनोरोग विशेषज्ञ उनकी इस मानसिक पीड़ा से निकलने में मदद करें।** एक ऐसी जगह जहाँ इन पीड़ितों को इलाज मिले, खाना मिले, पहनने को कपड़े मिलें, खुद कुछ करने का साधन मिले, नयी हिम्मत मिले, लड़ने की शक्ति मिले और एक नया जीवन शुरू करने की दिशा मिले।

साभार- 'My Half of the Sky' by Indrani Raimedhi

❑❑❑

Artists who have opposed Award Wapsee:

1. Prasoon Joshi – Lyricist and adman Joshi attacked the award returnees saying he was feeling uncomfortable about the political dimension that the protest had acquired and that a writer "should not be jumping and jousting".

He also said, "It will be more dignified if a litterateur expresses herself through her creation"

2. Savita Raj Hiremath – Hiremath is the producer of Dibakar Bannerjee's debut film **Khosla ka Ghosla.** Bannerjee had chose to return the National Award this film had won.

Hiremath, has now come out and slammed Bannerjee, saying he was desperate for media attention.

She further said that Bannerjee had no right to return the award without speaking to her, since it is given for the film that includes everyone actors, producer.

She further said:

"But there are other ways to protest too. It is very clear that he is trying to get media space for his film which has just released. He is desperate"

She also opined he did not return the award he received for his film 'Oye Lucky Lucky Oye' because it was a Disney film and he wouldn't take a risk with someone as big as Disney.

3. Pandit Hari Prasad Chaurasiya –Multiple Padma Awardee, Pt Chaurasiya has also attacked the Award returnee brigade.

He called the entire award returning episode, a "political game".

He said he has no idea why artists are doing such a thing (returning awards) because **an award is given by a Government, not a party.**

He also said there are various other methods to protest against an incident.

He also said that returning awards is in fact sending a wrong message and that its a wrong trend.

He also said that the award returnees are spoiling the country's image and he is deeply hurt by it.

4. Madhur Bhandarkar – National Award winning film maker Madhur Bhandarkar also opposed the charade of Award Returns.

He said that returning an award is not only an insult to the honour but to one's craft as well.

He also wondered whether the people who are returning their awards now, will accept any honors for their work from the current Government.

He also attacked the returnees for "selective activism":

The other side of coin

अभी हाल में 'असहिष्णुता' के मुद्दे को हवा देते हुए अनेक लेखक/प्रबुद्ध लोगों ने अपने 'एवार्ड' वापस किए हैं। जिनकी राष्ट्रीय मीडिया में चर्चा रही है। पर अनेक विशिष्ट व्यक्तित्व ऐसे भी हैं जिन्होंने अवार्ड वापसी का विरोध किया पर वे अचर्चित ही रहे। उनके विचार 'सत्यार्थ सौरभ' के पाठकों के लाभार्थ प्रस्तुत हैं। – संपादक

There cannot be cherry picking on any issue. **This is selective target, activism. You cannot react to only those things which suit you.** There was no outrage when Salman Rushdie was not allowed for the literary fest, when Taslima Nasreen was facing backlash, when Kamal Hasaan's movie ran into trouble.

5. Vidya Balan – Balan who received her National Award for "The Dirty Picture" also refused the Award Returnee brigade. She said:

"This honour (the award) is by the nation and not the Government. So I do not want to return it,"

6. Vivek Agnihotri – Agnihotri, who is the director of the Award winning film "Buddha in a Traffic Jam" came down hard on the Award returning business. He said:

"India is the first and the only country where people don't refuse awards but return awards after milking them to their advantage,"

7. **Anupam Kher** – Senior actor and husband of BJP MP Kirron Kher has also time and again slammed the returning of awards.

He said:"This is politically motivated, it's not like violent incidents are happening in nation for the first time. I think this is mostly to discredit the PM. If they want to return why not return everything?"

8. S L Bhyrappa – Eminent Kannada writer & Sahitya Academy awardee SL Bhyrappa called it a "publicity stunt" and said that the time has come to distinguish between "political litterateurs" and "pure litterateurs".

He said:

"It is a ploy to destroy the democratic fabric of the country and the functioning of the Sahitya Academy, which is an autonomous body. I condemn Kalburgi's killing and the Dadri lynching. But what does the Modi government have to do with these incidents? Dadri is in Uttar Pardesh where Samajwadi Party is in power. Kalburgi's killing took place in Karnataka, which is under Congress rule. There is a political agenda behind what writers are doing which needs to be examined and publicly discussed

9. Shyam Benegal – Multiple Padma awardee Shyam Benegal too criticized the returning of

awards saying that the National award is given to individuals by the nation, by the state, not by the government.

He also said:

Returning national award is not the only way, it doesn't make any sense; there are many ways that you can protest.

He also said that by returning the awards, they are disrespecting the National Award.

10. Anup Jalota – Veteran artist Anup Jalota said that the trend of returning National and Academy Awards was an "insult" to the nation. He said that instead, the community could sit together and meet the President of the country in order to express their protest to ease the situation.

11. Manish Mundra – Mundra is the producer of award winning films like Masaan and 'Aankhon Dekhi' and has also acted in a few films. Mundra hit out at the "sickulars" slamming them for their hypocrisy. In a tweet he said:

"Ok what is excessive intolerance sickulars are talking of? That those who never chose to speak, now are voicing against pseudo secularism!"

Besides being a producer, Mundra is also the CEO of pharmaceutical company. He also expressed his anger"when India is suddenly portrayed as place worse than Saudi Arabia or governed by people worse than ISIS."and called it a "a trap"

12. Pt Chetan Joshi – Flautist Pt Chetan Joshi, has said: "We have been artists for several years now and suddenly there is a fistful of people who are saying that there is no freedom in the country , but we don't see or feel any such thing on the ground."

He will be part of the "Jawab Do"counter movement.

13. Daya Prakash Sinha – Play right Daya Prakash Sinha has also attacked the Award returnees. While lending support to the "Jawab Do" campaign, he said "Where were these people when Kashmiri Hindus were being thrown out of their homes, during the Emergency or the anti-Sikh riots? This is selective sensitivity that is mostly against PM Modi, just to malign him and deliberately tarnish his international reputation,"

14. Amish Tripathi – Celebrated author Amish Tripathi broke ranks and attacked the Award Wapsee brigade. He said the authors received awards from a society and not the government and by returning these awards, they have insulted the society.

He further added that the data does not support the claims made:

"The authors received awards, recognition, or money from the Indian society and not from Indian government. So far as

the matter of returning awards are concerned, data says, 1.25 billion people living in the country are not communal".

15. Gopaldas Neeraj – Multiple Padma Awardee and veteran poet Gopaldas Saxena 'Neeraj' accused the Award Returnees of playing politics against Narendra Modi. He further alleged that all this people had received awards during the Congress rule and now the Congress it self was making them return the same.

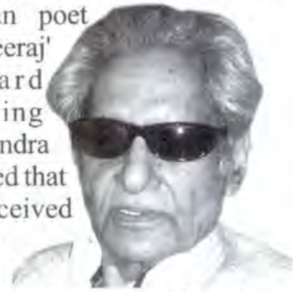

16. Chidananda Murthy – Sahitya Academy Awardee and Kannada writer, researcher and historian Murthy also slammed the returning of awards. He said that such tactics do not serve any purpose

"It is the responsibility of the investigation agencies to apprehend the killers of MM Kalburgi and other rationalists. It is not correct to put pressure on the State and the probe agencies. Such pressure tactics do not serve any purpose,"

17. Patil Puttappa – Writer and veteran journalist ridiculed writers who were returnng awards. In a release, he said that Kalburgi's murder was highly condemnable but the reaction of the litterateurs in returning the awards was not justifiable. He asked why writers were mute when hundreds of farmers committed suicide in the State and incidents of rampant corruption, sexual assaults and atrocities were being reported from various parts of the country on a regular basis.

18. Ashok Chakradhar – Renowned Hindi poet and author Ashok Chakradhar has hit out at those returning Sahitya Academy awards to protest against alleged rising intolerance in the country.

In a Facebook post, especially aimed at his colleague and one of the award returnees Munawwar Rana, Mr. Chakradhar has questioned the wisdom of those who are taking this route to protest against the claimed issues of intolerance and free speech.

Chakradhar suspects that there was mix of political and communal pressure on Rana, which forced him to go back on his own conviction and return his Sahitya Academy award.

In his post, Chakradhar claims that minds of Muslims have been poisoned into believing that they are not safe in India, and this aspect might have forced Rana to return the award.

Chakradhar also indirectly blames the media for exaggerating events and creating an atmosphere of fear in the country.

He says that poets and writers should make common people aware of this 'game of TRP'.

Scientists who have opposed Award Wapsee:

1. Bikash Sinha – Mr Sinha, who is a Padma Bhushan awardee and a Physicist has said that returning awards in such a manner is "an insult to the country". He further said that such a charade of returning awards will not solve the problem. Instead, he said the awardees should show their protest in some other form and attack the source of the problem.

2. G Madhavan Nair – Former chairman of ISRO and Padma Bhushan awardee G Madhavan Nair, hastermed the Award-Wapsee routine a mere "show". He said that awards are mostly given to people for their life-time achievements and "you cannot belittle that (by returning them). The individuals should be proud that the nation has honored them and that (award) stays with them until they leave this world." He slammed the behaviors of scientists and writers saying

"Matured people like scientists and writers should not react like this; they should respond constructively. We have to be pro-active and take corrective action rather that making such….I will say it's only a show"

He said that a few incidents can happen in a large country like India, and for the Government cannot be held responsible for the same. When asked about the timing of the protests, he said: "There could be some political agenda (in returning the awards). It cannot be ruled out. There are always some people following some

philosophy or the other. There could be some political motives also behind that,"

He said the issue was being "over-hyped" and "because of the large publicity through electronic media and also through social media" it is spreading like wild fire.

He further said that such action "only creates news for one day" and serves no purpose, and instead of this, people should talk to the "concerned people", convince them and bring them back to "normal stream".

3. Harish Chandra Verma – Prof HC Verma, an Indian experimental physicist and professor in the Department of Physics at IIT Kanpur passed a terse remark hinted at the Award Wapsee gang.

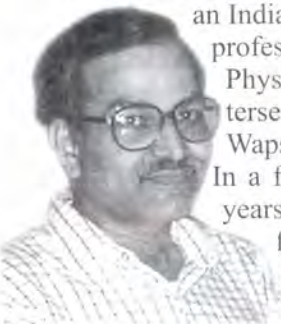

In a facebook post he said, a few years ago he had received an award from IIT Delhi, and that sometimes he wondered whether he too would counted among "eminent intellectuals" if he returned the said award.

□□□ courtsey- Indiaopine.com

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

•सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो। सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु,कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है:-

• सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर **लागत मूल्य से आधी कीमत में** सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ पर दिया जावेगा।

राशि	प्रतियों की संख्या	राशि	प्रतियों की संख्या
एक लाख रु.	दस हजार	७५०००	७५००
५००००	५०००	२५०००	२५००
१००००	१०००	इससे स्वल्प राशि देने वाले दानवीरों के नाम ग्रन्थ में अंकित किये जायेंगे।	

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, उदयपुर खाता क्रमांक ३१०१०२०१००४१५१८ में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

भवानीदास आर्य (मंत्री-न्यास) | भंवरलाल गर्ग (कार्यालय मंत्री) | डॉ.अमृत लाल तापड़िया (उपमंत्री-न्यास)

अनेक विशेषताओं से युक्त १८८४ के मूल सत्यार्थप्रकाश के सर्वाधिक नजदीक, तत्कालीन शैली का संरक्षण, मुद्रण अशुद्धियों से रहित

सत्यार्थप्रकाश

अवश्य खरीदें।

अब मात्र आधी कीमत में ₹ ४०

घाटे की पूर्ति पूर्ववत् दानदाताओं के सहयोग से ही संभव होगी। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सत्यार्थप्रकाश प्रेमी इस कार्य में आगे आवेंगे।

३५०० रु. सैंकड़ा शीघ्र मंगवाएँ

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर - ३१३००१

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्याँमार) स्मृति पुरस्कार

"सत्यार्थ-भूषण" पुरस्कार ₹ 5100

कौन बनेगा विजेता

☞ न्यास की मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ का सदस्य होना आवश्यक है।

☞ जनवरी १६ से दिसम्बर १६ तक सत्यार्थ सौरभ के सभी १२ अंकों में प्रकाशित सत्यार्थप्रकाश पहेलियों को हल करें।

☞ हल की हुयी पहेली अन्तिम तिथि से पूर्व न्यास कार्यालय में पहुँचे यह सुनिश्चित करें।

☞ अपना सत्यार्थ सौरभ सदस्यता क्रमांक हल की हुयी पहेली के ऊपर अवश्य अंकित करें।

☞ लिफाफे के ऊपर 'सत्यार्थप्रकाश पहेली क्रमांक' अवश्य अंकित करें।

☞ ऊपरलिखित उपबन्धों के अधीन पूरे १२ महीने शुद्ध हल भेजने वालों में से एक विजेता का चयन लॉटरी के द्वारा होगा।

☞ विजेता को 'सत्यार्थ-भूषण' की उपाधि, प्रमाण-पत्र तथा ₹५१०० नकद प्रदान किए जावेंगे।

☞ आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।

☞ विश्व भर के लोगों से सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका के अन्तर्गत 'सत्यार्थकाश पहेली' में भाग लेने का अनुरोध है।

सत्यार्थ सौरभ के वर्तमान ग्राहकों के लिए रियायती योजना

आपकी सदस्यता को यदि आप पंचवर्षीय सदस्यता में परिवर्तित करते हैं तो चार सौ की बजाय केवल तीन सौ रु. भेज दें तो आपको पंचवर्षीय सदस्यता सूची में नामित कर लिया जायेगा। इसी प्रकार अगर आप आजीवन सदस्य बनना चाहते हैं तो बजाय एक हजार रु. के मात्र नौ सौ रु. प्रेषित करने का श्रम करें तो आपको आजीवन सदस्यता सूची में सम्मिलित कर लिया जायेगा।

समाचार

वेद प्रचार सप्ताह हर्षोल्लास के साथ मनाया

आर्य समाज मंदिर, चौक पटियाला का वेद प्रचार सप्ताह दिनांक १४ अक्टूबर से १८ अक्टूबर २०१५ तक बहुत ही श्रद्धा और हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

समारोह को गरिमा प्रदान करने वालों में आचार्य हरिशंकर अग्निहोत्री, डा. वीरेन्द्र विद्यालंकार, स्वामी ब्रह्मवेश जी, भजनोपदेशक श्री अरुण कुमार के नाम उल्लेखनीय हैं। - वेद प्रकाश तुली

कार्तिक मास में अनेक कार्यक्रम

आर्य उपप्रतिनिधि सभा, जिला अलवर के तत्वावधान में सम्पूर्ण कार्तिक मास को वैदिक संस्कृति के प्रचार का निमित्त बना लिया गया। इसके अन्तर्गत २७ अक्टूबर से २५ नवम्बर १५ तक कार्तिक मासीय यज्ञ, ऋषि निर्वाण दिवस, आर्यसमाज अलवर का वार्षिकोत्सव, जिला आर्य सभा- कार्यकर्त्ता सम्मेलन समारोह आयोजित किए गए।

- हरिपाल शास्त्री, मंत्री

सामवेदीय यज्ञ

दिनांक १ अक्टूबर से ११ अक्टूबर २०१५ तक वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न हुआ। जिसमें आर्य जगत् के तपोनिष्ठ संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी का प्रेरणास्पद उद्बोधन हुआ। - स्त्री आर्य समाज, शक्तिनगर

भजनोपदेश का अनुपम कार्यक्रम

आर्य समाज बसेडा के तत्वावधान में सुप्रसिद्ध भजनोपदेशिका अंजलि आर्या के सान्निध्य में ८ दिसम्बर से ११ दिसम्बर १५ तक अत्यन्त प्रभावशाली कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। - शिवपाल आर्य

गुरुकुल पूठ, हापुड़ का रजत जयन्ती समारोह

दिनांक ०६ से ०८ अक्टूबर, २०१५ को गुरुकुल पूठ की रजत जयन्ती समारोह के शुभ अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा उ. प्र. लखनऊ के तत्वावधान में दिनांक ०६ से ०८ अक्टूबर, २०१५ (तीन दिवसीय) प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया गया।

- स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, सभा मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. लखनऊ

गुरुकुल प्रभात आश्रम का वार्षिकोत्सव

मकर सौर संक्रान्ति के पावन अवसर पर १३ व १४ जनवरी २०१६, बुधवार व गुरुवार को वार्षिकोत्सव हर्षोल्लासपूर्वक मनाया जा रहा है। जहाँ १३ जनवरी २०१६ को वेदों के मूर्धन्य विद्वान् स्वामी समर्पणानन्द सरस्वती जी (पं. बुद्धदेव विद्यालंकार) की ४७वीं पुण्यतिथि के अवसर पर अखिल भारतीय वैदिक शोध संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। जिसका विषय है- 'वेदानुशीलन का अतीत और अनागत।'

१० जनवरी २०१६ को प्रारम्भ किये गये यजुर्वेद पारायण महायज्ञ की पूर्णाहुति, नवप्रविष्ट ब्रह्मचारियों का उपनयन संस्कार तथा वेदारम्भ संस्कार १४ जनवरी को होगा।

अधिक से अधिक संख्या में पधारकर धर्मलाभ उठायें एवं पुण्य के भागी बनें। निवेदक- स्वामी विवेकानन्द सरस्वती, गुरुकुल प्रभात आश्रम (६३१६००२४०२)

जयपुर में लगा पुस्तक मेला

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान द्वारा जयपुर में २८ नवम्बर से ६ दिसम्बर २०१५ तक आयोजित राष्ट्रीय पुस्तक मेले में अपना पुस्तक का स्टॉल लगाया गया जिसमें आर्ष साहित्य का विक्रय किया गया।

चतुर्वेद शतकम महायज्ञ

आर्य समाज, नेमदार गंज, नवादा, बिहार द्वारा दिनांक २८ नवम्बर से २ दिसम्बर २०१५ तक चतुर्वेद शतकम महायज्ञ सह मगध प्रमण्डलीय आर्य महासम्मेलन पूरी भव्यता से सम्पन्न हो गया। जिसमें यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य श्री हरिशंकर जी अग्निहोत्री, आगरा थे। राष्ट्र कवि श्री सारस्वत मोहन मनीषी, दिल्ली, श्री रमेन्द्र कुमार गुप्ता, महामंत्री बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा, पटना, आचार्य श्री उमाशंकर शास्त्री, योग आचार्य, डॉ. राधाकान्त सिंह, नेचुरोपैथ समस्तीपुर के नेतृत्व में भव्य शोभा यात्रा निकाली गई। शोभा यात्रा समापन पर श्री सारस्वत मोहन मनीषी द्वारा ओ३म् ध्वज का उच्च दण्ड पर उत्तोलन किया गया। - सत्यदेव आर्य 'मरुत'

यज्ञ से होता है पर्यावरण शुद्ध

यज्ञ एक श्रेष्ठतम कार्य, पर्यावरण शुद्धि का सर्वोत्तम उपाय है हमें अधिक से अधिक यज्ञों का आयोजन करते रहना चाहिए। उक्त विचार आर्य विद्वान् रामप्रसाद याज्ञिक ने बजरंग नगर वसुन्धरा विहार स्थित विश्व भारतीय सीनियर सैकण्डरी स्कूल में आयोजित यज्ञ कार्यक्रम में व्यक्त किए। आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने अपने उद्बोधन में कहा कि हमें अपना जीवन यज्ञमय बनाना होगा।

- अरविन्द पाण्डेय, प्रचार एवं कार्यालय सचिव, आर्य समाज,गायत्री विहार, कोटा

राजीव आर्य का निधन- आर्य समाज की अपूरणीय क्षति

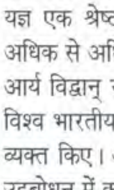

केन्द्रीय आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के युवा महामंत्री श्री राजीव आर्य के एक एक्सीडेन्ट में निधन का दुखदायी समाचार आर्य जगत् ने स्तब्ध होकर सुना। श्री राजीव आर्य एक कर्मठ, निष्ठावान, उत्साही तथा समर्पित आर्य थे। सभी गुणों का संगम एक व्यक्तित्व में, विरल ही दिखाई देता है। आज की परिस्थितियों में श्री राजीव आर्य का निधन और भी अधिक पीड़ादायक है। आर्य जगत् को उनसे विशेष आशाएं थीं। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को अपनी ममता मयी गोद में स्थान प्रदान करें।

श्री बाबू मिठाई लाल सिंह जी को पुत्रशोक

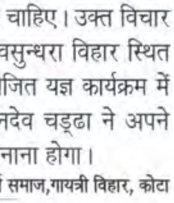

मुम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान, इस न्यास के न्यासी बन्धु श्री मिठाई लाल सिंह जी के पुत्र का मात्र ५६ वर्ष की आयु में एक संक्षिप्त बीमारी कते पश्चात् निधन हो गया। पुत्र वियोग की अपार पीड़ा को सहज ही समझा जा सकता है। परमपिता परमात्मा से यही निवेदन है कि बाबू मिठाई लाल सिंह जी व उनके परिवार को वह धैर्य और क्षमता प्रदान करें ताकि वे इस दुःख को सहन कर सकें।

प्रभु दिवंगत आत्मा को अपनी ममतामयी गोद में स्थान प्रदान करे।

आर्य समाज,रावतभाटा के चुनाव सम्पन्न

दिनांक १५ दिसम्बर २०१५ को आर्य समाज, रावतभाटा के चुनाव सम्पन्न हुए। जिसमें श्री नरदेव आर्य, श्री ओमप्रकाश आर्य एवं श्री योगेश आर्य को क्रमशः प्रधान, मंत्री एवं कोषाध्यक्ष के पद की जिम्मेदारी सौंपी गई। चुनाव अधिकारी श्री विजय सिंह जी थे। सभी निर्वाचित पदाधिकारियों को सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

हलचल

मानव सेवा ही ईश्वर की आराधना- श्री अशोक आर्य

शारदीय नवसस्येष्टि पर्व एवं दयानन्द निर्वाण दिवस पर आयोजित अनुष्ठान में श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष

श्री अशोक आर्य ने कहा कि मानव सेवा ही ईश्वर की सबसे बड़ी पूजा है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इसी मार्ग पर चलते हुए विश्व में वेदों की पुनर्स्थापना, राष्ट्रीयता की जागृति, समाज की बुराइयों के सुधार हेतु अपना समूचा जीवन आहूत कर दिया।

आरम्भ में श्री अनन्त देव शर्मा के पौरोहित्य में यज्ञ सम्पन्न हुआ। श्रीमती राधा देवी त्रिवेदी ने भजन प्रस्तुत किए। श्री भंवर लाल आर्य, प्रधान आर्य समाज हिरणमगरी ने धन्यवाद ज्ञापित किया। संचालन श्री भूपेन्द्र शर्मा ने किया। समाज के संरक्षक डॉ. अमृत लाल तापड़िया एवं मंत्री श्रीमती ललिता मेहरा ने समस्त आर्य परिवारों को पर्व विशेष की बधाइयां दी। अंत में श्री इन्द्रप्रकाश यादव द्वारा शांति पाठ एवं जयघोष किया गया।

- उप मंत्री, आर्य समाज, हिरणमगरी, उदयपुर

श्रीमद् दयानन्द निर्वाणोत्सव समारोह मनाया

सेवाराम जी पटेल की बावड़ी आर्य समाज मंदिर पर आयोजित ऋषि निर्वाण दिवस समारोह में आर्य समाज नागदा के धर्माचार्य डॉ. पंडित लक्ष्मीनारायण सत्यार्थी ने पंच दिवसीय दीपावली पर्व, धनतेरस, रूपचौदस, लक्ष्मी पूजा, गोवर्धन पूजा व भाई दूज के बारे में विस्तृत जानकारी देते हुए त्योहारों की महत्ता पर प्रकाश डाला।

निर्वाण उत्सव दिवस पर आर्य समाज मंदिर पर आकर्षण विद्युत सज्जा की गई तथा यज्ञवेदी १३२ मिट्टी के दीपों से सजाई गई।

- सूचना प्रमुख, अग्निवेश पाण्डे

वेद सारे संसार का संविधान-आचार्य राजकुमार शास्त्री

निम्बाहेड़ा स्थानीय आर्य समाज में स्वामी ध्यानानंद के सानिध्य में आर्य समाज का वेद प्रचार एवं पारिवारिक सत्संग कार्यक्रम करीब

पन्द्रह दिनों से जारी है। हरियाणा के महेन्द्रनगर निवासी आचार्य राजकुमार शास्त्री ने बताया कि दुनिया के अलग-अलग देशों में अलग-अलग संविधान बने हुए हैं और उनमें भी समय-समय पर संशोधन होते रहते हैं। कोई संविधान पूर्ण नहीं है। जबकि वेद सारे संसार का पूर्ण संविधान है और मानव के कल्याण की सारी बातें इसमें निहित है। आवश्यकता इसके लागू करने की है।

इस अवसर पर कैलाश शास्त्री, मोहनलाल आर्यपुष्प, भरत आर्य, प्रकाश धाकड़, विशाल साबू सहित बड़ी संख्या में महिलाऐं उपस्थित थीं।

- रविन्द्र साहू, मंत्री

प्रतिस्वर

मान्यवर नमस्ते,

सत्यार्थ सौरभ में (सितम्बर) आपका लेख 'हौसलों की उड़ान' पूर्णतः सराहनीय, उपयोगी, प्रेरणादायी एवं सामायिक है। ऐसे ही लेखों की इस पुस्तक में उपयोगिता होती है। इस लेख में आपने कलाम के जीवन सम्बन्धी खोजपूर्ण तथ्य भी प्रकट किये हैं। ऐसे लेख को स्थान देने के लिए आपको बहुत ही बधाई एवं साथ ही 'मक्का भावना और हम' यह भी अत्यन्त, उपयोगी एवं वर्तमान आर्यसमाज जिस दिशा की ओर जा रहा है उस पर प्रहार करते हुए हमें सावधान कर रहा है। यद्यपि यह लेख ४.३.१९७३ का है तथापि हम आर्य समाजियों को भविष्य में अविद्या में गिरने से रोकता है।

आशा है कि भविष्य में भी आप ऐसे लेखों को सत्यार्थ सौरभ में स्थान देते रहेंगे। आपको इसके लिए धन्यवाद।

- प्रेमचन्द्र शर्मा, लखनऊ (उ.प्र.)

श्री प्रमोद आर्य उपमंत्री आर्य उपप्रतिनिधि सभा वाराणसी की धर्मपत्नी का निधन

आर्य उपप्रतिनिधि सभा वाराणसी के उपमंत्री श्री प्रमोद आर्य जी की धर्मपत्नी का दिनांक ४ दिसम्बर २०१५ को ५० वर्ष की आयु में आकस्मिक हृदय गति रुक जाने के कारण निधन हो गया। वे अपने पीछे २ बेटे व १ बेटी छोड़ गयी हैं। सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से हार्दिक संवेदना।

शुभ विवाह सम्पन्न

आर्य जगत् के प्रसिद्ध भजनोपदेशक (स्व.) पं. पन्ना लाल पीयूष की

पौत्री तथा न्यास के सहयोगी श्री सुधाकर पीयूष-रेखा पीयूष की पुत्री सौ. का. मेधा पीयूष का शुभ विवाह रायसिंह नगर निवासी श्री सुदेश कुमार सर्वा के पुत्र श्री सचिन के साथ दिनांक २७/११/२०१५ को सानन्द सम्पन्न हुआ। पाणिग्रहण संस्कार आर्य जगत् की विदुषी आचार्या सूर्या देवी जी ने कराया। पीयूष परिवार को सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से अनेकानेक बधाई व शुभकामनाएँ। प्रभु नवदम्पत्ति पर अपना वरदहस्त बनाए रखें यही कामना है।

- नवनीत आर्य

सत्यार्थ प्रकाश पहेली - २० के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली के संदर्भ में हमें उत्साहजनक प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हो रही हैं। **सत्यार्थ प्रकाश पहेली- २०** के चयनित १० विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं- श्री कर्मवीर आर्य, शाहपुरा (राज.), श्री यज्ञसेन आर्य, विजयनगर (राज.), श्री धर्मप्रकाश आर्य, नवादा (बिहार), अन्नू आर्या, सोनीपत (हरि.), श्री अरुणमुनि वानप्रस्थ, रेवाड़ी (हरि.), श्री श्रवण, जोधपुर (राज.), श्री रामप्रसाद श्रीवास्तव, लखनऊ (उ. प्र.), श्री दयाल भाई जादव, डिंडोली (गुजरात), श्री सुरेन्द्रपाल चौधरी, अजमेर (राज.), श्री अनिल कुमार, मेरठ (उ. प्र.)। **इनको स्वयं को अथवा इनके द्वारा नामित भाई/बहिन को १ वर्ष तक सत्यार्थ सौरभ पत्रिका निःशुल्क भेजी जावेगी।**

कथा सरित

गुरु जी आपका गुरु कौन था?

महान् सूफी गुरु हसन मृत्यु शय्या पर थे। उनके एक शिष्य ने उनसे पूछा- 'गुरु जी, आपका गुरु कौन था?'
हसन ने उत्तर दिया- 'मेरे हजारों गुरु थे। उनके नाम बताने में ही महीनों, शायद बरसों लग जाएँगे। मगर मैं उनमें से तीन के बारे में तुम्हें बताऊँगा।'

पहला एक चोर था।

एक दिन मैं एक रेगिस्तान में भटक गया, और आखिर में जब मैं एक गाँव में पहुँचा तो बहुत देर हो चुकी थी और सब कुछ बंद हो चुका था। आखिरकार, मुझे एक आदमी मिला जो एक मकान की दीवार में सेंध लगाने की कोशिश कर रहा था। मैंने उससे पूछा कि रात गुजारने को कोई जगह होगी क्या? उसने कहा कि इतनी रात में तो ऐसी जगह मिलनी मुश्किल है। 'मगर तुम्हें एक चोर के साथ रहने में कोई परेशानी न हो, तो तुम मेरे यहाँ आ सकते हो।'
मैं उसके साथ पूरा एक महीना रहा। हर रात वह काम पर जाता। जाते समय वह कहता- 'दुआ करो, ध्यान लगाओ।' जब वह लौटता तो मैं पूछता- 'कुछ मिला?'
'नहीं, आज तो कुछ नहीं मिला। मगर कल मैं फिर कोशिश करूँगा, और खुदा ने चाहा तो.......।'
वह कभी निराश नहीं होता था, वह हमेशा सुखी, खुश और विश्वास से भरा होता था।
तब से, मैंने ध्यान लगाने में बरसों बिता दिए मगर कभी कुछ नहीं हुआ, न खुदा का दीदार हुआ और न कोई असाधारण घटना ही हुई। अक्सर, बहुत हताश होने पर, सब कुछ छोड़ देने का मन होने पर मैं उस चोर को याद करता जो हर रात मुझसे कहता था- 'खुदा ने चाहा तो, क्या पता कल हो जाए।'

मेरा दूसरा गुरु एक कुत्ता था।

एक दिन मैं प्यासा था और एक नदी पर गया। तभी एक कुत्ता भी वहाँ आ गया। वह भी प्यासा था। वह पानी की तरफ झुका तो एक कुत्ता उसे घूरता दिखा। यह उसका ही अक्स था। मगर वह डर गया; वह भौंकता हुआ वहाँ से भाग गया। फिर भी, वह इतना प्यासा था कि उसे बार-बार लौटकर वहाँ आना पड़ा। आखिर में अपने डर के बावजूद वह नदी में कूद पड़ा। इस तरह वह दूसरा कुत्ता गायब हो गया। जहाँ तक मेरी बात है तो, मुझे इसमें ईश्वर का एक चित्र दिखाई दिया। चाहे तुम भयभीत ही क्यों न हो, तो भी तुम्हें कूदना है।

तीसरा गुरु एक बच्चा था।

मैं एक कस्बे से होकर जा रहा था कि मैंने एक लड़के को एक जलती मोमबत्ती पकड़े देखा। वह इसे मस्जिद ले जा रहा था। मैंने मजाक में उससे पूछा- 'क्या तुमने यह मोमबत्ती खुद जलाई?'
'जी हाँ, उसने जवाब दिया।'
मैंने फिर पूछा- 'पहले, मोमबत्ती जली नहीं थी, और बाद में मोमबत्ती जल गई। तो यह रोशनी कहाँ से आई?'
तब वह लड़का हँसा, उसने मोमबत्ती बुझा दी और कहा- 'और अब आपने रोशनी को जाते देखा। वह कहाँ गई? क्या आप मुझे बता सकते हैं?'
मैं हिल गया। उस पल मैंने जाना कि मैं कितना मूर्ख था, मैं तो यह समझता था कि मैं विद्वान् हूँ और मेरे पास कितना ज्ञान है, वह सब अनिश्चित था। उसके बाद से मैंने बड़ा ज्ञानी होने का दिखावा नहीं किया। मेरा कोई एक गुरु नहीं रहा, मगर मैं एक शिष्य था, हसन ने अपनी बात खत्म करते हुए कहा। 'जीवन मेरा गुरु था क्योंकि उसने जो कुछ भी मुझे दिया उससे मैंने कुछ न कुछ सीखा।'

❑❑❑

साभार- देश-विदेश की बोध कथाएँ

चलते रहें

अगर आप स्वस्थ जीवन और लंबे समय तक जीना चाहते हैं। दिन में कम से कम दो घंटे तक खड़े रहने की कोशिश करें। अगर आप खड़े रहने की समयावधि चार घंटे तक बढ़ा सकते हैं तो इससे आपका ही फायदा होगा, यह दावा ब्रिटिश स्वास्थ्य दिशा-निर्देशों में किया गया है।

स्वस्थ रहने के लिए कार्यालय में काम करने वाले कर्मचारियों को कम से कम रोजाना दो घंटे तक खड़े रहना चाहिए। यह दिशानिर्देश स्पोर्ट्स मेडिसिन ब्रिटिश जरनल में प्रकाशित किये गये हैं। दिशानिर्देश पब्लिक हेल्थ इंग्लैंड और नॉन-प्रोफिट ऑर्गेनाइजेशन एक्टिव वर्किंग सीआईसी द्वारा जारी किये गये हैं।

लेकिन कार्यालय में ही क्यों? कार्यालय से घर जाते समय, मेट्रो ट्रेन या बस में खड़े रहना काफी है? क्या कार्यालय में जो व्यक्ति खड़ा होगा उसे ही स्वास्थ्य लाभ होगा?

नई दिल्ली के बी. एल. के. सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल के आर.के. सिंघल ने बताया, 'यह साबित हो गया है कि खड़े रहना बैठने की तुलना में ज्यादा कैलोरी कम करता है, जब हम ऑफिस या मेट्रो ट्रेन में खड़े होते हैं तो हमारे सभी अंग सक्रिय होते हैं। इसलिए बैठने की तुलना में खड़े रहने की स्थिति में कैलोरी ज्यादा कम होती है।'

खड़े रहने के अतिरिक्त आप कार्यालय में थोड़ा पैदल भी चल सकते हैं जिससे और भी ज्यादा कैलोरी कम होगी, क्योंकि मेट्रो में चलना मुमकिन नहीं है।

तो खड़े रहने से कैलोरी कैसे कम होती है?

अमेरिकन काउंसिल की एक रिपोर्ट के अनुसार- चुपचाप खड़ा ६८ किलो का व्यक्ति एक घंटे में ११४ कैलोरी कम कर सकता है या आठ घंटे में ६१२ कैलोरी।

वहीं सिंघल का कहना है, 'मैं सुझाव दूँगा कि खड़े रहने की क्षमता धीरे-धीरे वक्त के साथ आती है और अंत में चार घंटे तक खड़े रहने की क्षमता आपके स्वास्थ्य को लाभ देगी।'

लेकिन सबसे पहले खड़े रहने के सही तरीके को सीखना जरूरी है।

सिंघल ने सुझाव दिया, 'जब आप खड़े होते हैं तो अपने कंधे और पीठ को आराम दें, अपने सिर को सीधा रखें अपने सीने को बाहर रखने की कोशिश करें और पेट को अंदर, सीधे और सही से खड़े हों।'

नई दिल्ली के मैक्स सुपर स्पेशिएलिटी अस्पताल की रीतिका समादार का कहना है, 'हमेशा से यह सुझाव दिया गया कि बैठे रहने से अधिक खड़े रहने की तुलना में कैलोरी कम होती है।'

समादार ने बताया, 'चलने की क्षमता में थोड़े बदलाव की आवश्यकता है, इसमें आप अपने स्मार्टफोन पर बात करते हुए चल सकते हैं और फोन पर बातचीत के दौरान अपने हाथ हिलाकर बात कर सकते हैं।'

उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि थोड़े से बदलाव में अगर आप अपनी सीट से हर आधे घंटे में उठते हैं और अपने पैरों पर खड़े होते हैं तो इससे आप और अधिक स्वस्थ्य रहेंगे और इससे आपका वजन भी कम होगा। इसके साथ ही आप स्वस्थ भोजन करें।

इन सबके साथ आपको कुछ बातें ध्यान रखने की भी जरूरत है। लंबे समय तक एक ही स्थिति में खड़े रहना या बैठना हानिकारक है। दरअसल, मांसपेशियों के तनाव के बाद थोड़े आराम की जरूरत होती है। काफी लंबे समय तक खड़े रहना आपको आराम नहीं देगा और इससे पैरों में दर्द भी शुरू हो जाएगा।

इसके लिए सिंघल का कहना है कि इससे आपके घुटनों के जोड़ पर प्रभाव पड़ता है।

कोलम्बिया एशिया अस्पताल-गाजियाबाद के चिकित्सक डॉ. दीपक वर्मा ने सलाह दी है, 'लंबे समय तक खड़े रहना पैरों के दर्द का कारण बनता है और इससे सूजन भी होती है और यह हमारी रीढ़ को भी प्रभावित करता है। ऐसे में हमें लंबे समय तक खड़े रहने से बचना चाहिए।'

वर्मा का कहना है- '१५ मिनट से अधिक एक ही स्थिति में खड़े या बैठे ना रहें।'

कार्यालय से मैट्रो तक जब भी आपको मौका मिलता है तो बैठने को कहें अलविदा और खड़े हो जाएँ। बस इसे ज्यादा समय तक न करें।

□□□

courtesy- Ndtv khabar

स्वदेशीय राज-दर्शन के अद्भुत प्रणेता

-महर्षि दयानन्द सरस्वती

महर्षि दयानन्द जी महाराज ने अपने अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' के ६वें समुल्लास में पृथक् रूप से राजधर्म के विविध पहलुओं पर अपना मन्तव्य निरुपित किया है तथा राजनीति के महत्त्वपूर्ण तत्त्वों पर अनेक मौलिक उद्भावनाएँ दी हैं। महर्षि ने अपनी अन्य कृतियों में भी चक्रवती साम्राज्य, स्वराज्य व राज्यादि ऐश्वर्य की आकांक्षाएँ भी व्यक्त की हैं। हम महर्षि दयानन्द को राजनीति के दार्शनिक कह सकते हैं। स्वामी जी पहले चिन्तक हैं जो बिना पश्चिम के ज्ञान से प्रभावित हुए ही केवल वैदिक प्राच्य विद्या के आधार पर राजनीति विज्ञान व राष्ट्रीयता पर विचार देते हैं। कैलगेरी कनाडा विश्वविद्यालय के राजनीति शास्त्र के प्रोफेसर श्री एन्थोनी पारेल लिखते हैं- "Swami Dayanand derived his nationalist ideas by originality of his own understanding of Indian culture and without any direct influence of Western thought"

वे आगे लिखते हैं- "According to modern thought a nation is people that is conscious of its historical identity, its culture uniqueness, its common language, its common territory and its claim to self rule, Swami Dayanand's conception of nationalism and policy meet all these requirement"

'अर्थात् स्वामी दयानन्द के राष्ट्रीयता के विचार भारतीय संस्कृति की उनकी अपनी मौलिक समझ पर आधारित थे तथा उन पर पश्चिम का बिल्कुल प्रभाव नहीं था।.....

आधुनिक विचार के अनुसार राष्ट्र ऐसे लोगों का समूह है जो अपने देश की ऐतिहासिक पहचान, अपनी संस्कृति की श्रेष्ठता, इसकी सामान्य भाषा, निश्चित क्षेत्र सीमा तथा स्वराज्य के अधिकार के प्रति जागरूक हों। 'स्वामी दयानन्द की राष्ट्रीयता की अवधारणा व नीति सभी अपेक्षाओं को पूरा करती है।'

यह दुःख व शोक का विषय है कि पाश्चात्य विद्वानों का अनुसरण कर भारत के इतिहासकार तथा यहाँ तक कि राजाराममोहन राय जैसे चिन्तक तथा समाजसुधारक भी यह मानते थे कि ब्रिटिश लोगों की वजह से ही भारत में ज्ञान विज्ञान की अभिवृद्धि हो रही है, यही कारण था कि वे ब्रिटिश शासन को वरदान समझकर ईश्वर से प्रार्थना करते थे कि यह शासन लम्बे समय तक बना रहे। यह विडम्बना ही थी कि इन लोगों की मान्यता थी कि भारत में राष्ट्रवाद की भावना, लोकसत्ता तथा प्रजातंत्र की धारणा उसी समय से फैलने लगी, जबकि देशवासी यूरोपीय राजनैतिक चिन्तन के सम्पर्क में आए। प्रकारान्तर से यह कहा जाता रहा है कि रूसो और वाल्तेयर, बेन्थम और मिल से अनुप्राणित होकर ही देश में राजनैतिक चेतना का स्फुरण हुआ, परन्तु ऐसा कहने वाले इस तथ्य को भूल जाते हैं कि दयानन्द ने अपने ग्रन्थों में राष्ट्रवाद, लोकसत्ता और प्रजातंत्र पर आधारित राज्य शासन की जैसी परिकल्पना की है, उसे किसी पाश्चात्य चिन्तक अथवा दार्शनिक से कोई प्रेरणा नहीं मिली थी। उन्होंने राजधर्म विषयक अपनी सारी अवधारणाएँ वेद तथा वेदानुकूल ब्राह्मण, मनुस्मृति, शुक्रनीति आदि ग्रन्थों से प्रस्तुत की हैं। उनकी दृढ़ मान्यता थी कि वेदों में समस्त सत्य विद्याएें हैं। वे लिखते हैं कि- 'जो-जो भूगोल में राजनीति चली और चलेगी, वह सब संस्कृत विद्या से ली है।' और जिनका प्रत्यक्ष लेख नहीं है, उनके लिए-

प्रत्यहं देशदृष्टैश्च शास्त्रदृष्टैश्च हेतुभिः। - मनु. ८/३

जो नियम राजा और प्रजा के सुखकारक और धर्मयुक्त समझे, उन-उन नियमों को पूर्णतः विद्वानों की राजसभा बाँधा करे।

Indian National Congress के १६१२ के अधिवेशन का सभापतित्व करने वाले पं. विशन नारायण दत्त ने ठीक ही कहा था कि स्वामी दयानन्द अपने युग के सर्वाधिक मौलिक हिन्दू हैं। वे ही प्रथम भारतीय सुधारक हैं जो पश्चिमी संस्कृति से कुछ भी ग्रहण नहीं करते। वे कहते हैं- अर्थात् इस सुधारक तथा राष्ट्र निर्माता (स्वामी दयानन्द) के सम्बन्ध में एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण बात यही है कि यह व्यक्ति आर्यों की प्राचीन विद्या एवं संस्कृति की ही उपज है। .... उसने पश्चिम से कोई प्रेरणा ग्रहण नहीं की। उसका यूरोप की सभ्यता, संस्कृति तथा उपलब्धियों से कोई परिचय नहीं था।

(नवजागरण के पुरोधा-दयानंद सरस्वती- डा. भवानी लाल भारतीय)

प्रसिद्ध इतिहासज्ञ प्रो. बी.बी. मजूमदार लिखते हैं-

'Swami Dayananda, the great founder of the Arya Samaj, occupies a unique position in the history of political ideas of modern India. He did not know English language nor did he care to draw inspiration from the political philosophers of the West. When the educated young men of India ware slavishly copying the superficial aspects of European civilizations and were making agitation for transplanting the political institution of England in Indian soil without paying any head to the genius and culture of the Indian people, Swami Dayananda boldly hurled India's defiance against the social, cultural and political domination of the West.'

❑❑❑

सम्पादक- अशोक आर्य

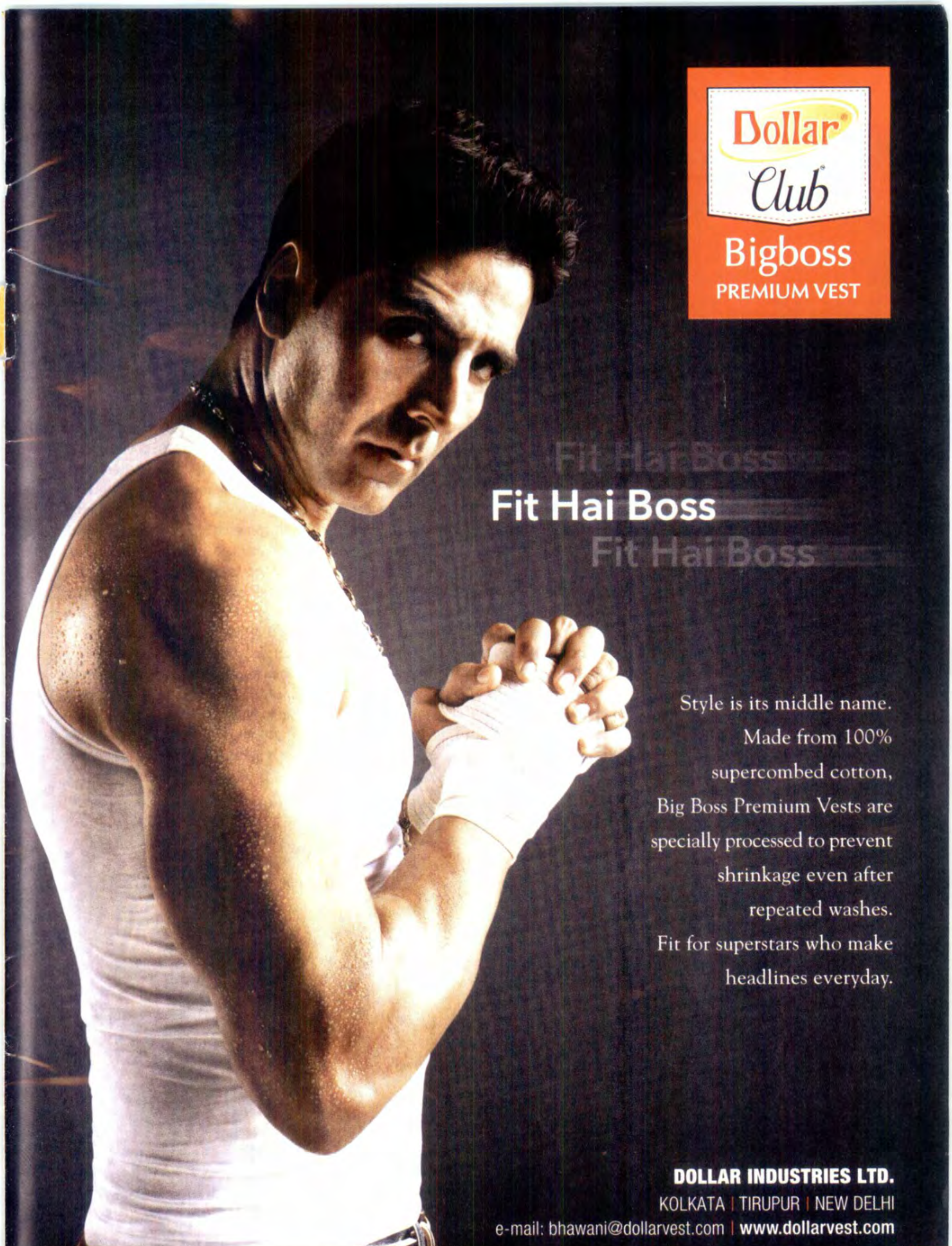
Dollar
Club
Bigboss
PREMIUM VEST
Fit Hai Boss
Style is its middle name. Made from 100% supercombed cotton, Big Boss Premium Vests are specially processed to prevent shrinkage even after repeated washes. Fit for superstars who make headlines everyday.
DOLLAR INDUSTRIES LTD.
KOLKATA | TIRUPUR | NEW DELHI
e-mail: bhawani@dollarvest.com | www.dollarvest.com

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 January-2016 [redacted]

Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2016-2018

जैसे माता सन्तानों पर प्रेम, उन का हित करना चाहती है, उतना अन्य कोई नहीं करता।

– सत्यार्थप्रकाश पृ. २८

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

मुद्रण दिनांक– प्रत्येक माह की ३ तारीख | प्रेषण दिनांक– प्रत्येक माह की ७ तारीख | प्रेषण कार्यालय– शास्त्री सर्कल, पोस्ट ऑफिस, उदयपुर

COPL/2412